

# શ્રીજૈન અરથા પ્રકાશ



વર્ષ ૩

આંક ૭

ક્રમાંક ૩૧

તંત્રી શાહ ચીમન લાલ ગોડધારા

# श्री जैन सत्य प्रकाश

( मासिक पत्र )

वि-४-४-८-१०-न



१ श्री चिंतामणो स्तोत्र	: आ. म. श्री. विजयपद्मसूरजी	: २३७
२ सम्बृहर्षान्	: आ. म. श्री विजयपद्मसूरजी	: २३८
३ समीक्षाब्रमाविष्करण	: आ. म. श्री. विजयलालण्यसूरजी	: २४२
४ अष्टांग थेग	: श्रीयुत शंकरलाल डाल्लाभाई कापडिया	: २५१
५ “भराभर” पर्वत परनी जैन गुहाओं	: श्रीयुत नाथलाल छगनलाल शाह	: २५७
६ वाहितुसूत्र	: श्रीयुत प्रेम लीरालाल रसिकदास कापडिया	: २५९
७ प्रवास-गीतिका-त्रय	: म. श्री. यतीन्द्रविजयजी	: २५८
८ उवसङ्गहरस्तोत्र	: श्रीयुत साराभाई भण्डिलाल नवाख	: २६४
९ दिगंबर शास्त्र कैसे बने	: मु. म. श्री. दर्शनविजयजी	: २६६
१० धतिहास अने नवलकथा	: मु. म. श्री. विद्वान्विजयजी	: २७२
११ धनपालनुं आहर्शी ज्ञवन	: मु. म. श्री. सुशीलविजयजी	: २७४
समाचार		२७६ सामें

## लक्षाज्ञम्

स्थानिक १-८-०

अहारगाम २-०-०

झटक अंक ०-३-०

सरनामुं भद्रलायाना समाचार दरेक अंग्रेज महिनानी  
तेरभी तारीख पहेलां लभी ज्ञानवावा.

## आ अंकमां अगत्यनो सुधारे।

२६८ भा पानानी आरभी लाईनो डेटेक्टर भाग डेटलीक नक्लोमांथी भापतां डिझी गयेा छे, ते त्यां आ प्रभाषे उमेरी लेवे—‘निष्ठर सुलिंग मांवनो’

सुदृढ़क : अंद्रशांकर उमाशांकर शुक्ल, प्रकाशक : वीभनलाल गोकर्णहास शाह, सुदृष्टस्थान : युग्धम सुदृष्टलालय सवाप्येस डोस रोड अमहानाह, प्रकाशनस्थान : श्री वैनधर्म सत्यप्रकाशक समिति कार्यालय, लेसिंगभाईनी वाडी, धीरांग, अमहानाह.

णमो त्थु णं भगवओ महावीरस्स  
 सिरि रायनयरमज्जे, संमीलिय सब्बसाहुसंमह्यं ।  
 पतं मासियमेयं, भव्वाणे मग्गयं विसयं ॥ १ ॥

# श्री जैन सत्य प्रकाश

पुस्तक ३

: क्रमांक ३१ :

अंक ७

---

विक्रम संवत् १५६४ :	वीर संवत् २४३४	: सन १५८८
भाद्र वद एकम	भगवान्नार	इष्टुआरी १५

---

## ॥ श्री चिंतामणि स्तोत्रम् ॥

कर्ता:-आचार्य महाराज श्री विजयपद्मसूरिजी

( गतांकथी पूर्ण )

( आर्यवृत्तम् )

नंदा भहा देवई, सिरिदेवी नम्मया मयणरेहा ॥  
 तह रेवई जयंती, कलावई सुंदरी वंदे ॥ २४ ॥  
 जंबूवई सुसीमा, प्पहावई धारिणी सुजिड्वाओ ॥  
 लक्खमणा रूपीणी, वंदे हं चिछ्णं सययं ॥ २५ ॥  
 तह पुण्यचूलमणिसं-मणोरमा मलयसुंदरी सुगुणा ॥  
 वंदे प्पहायसमप-रिसिदत्तासञ्चभामाओ ॥ २६ ॥  
 वेणा भूया रेणा, जक्खासुजक्खदिणाओ ॥  
 पणमामि भूयदिणं, सग बहिणी थूलिभद्रस्स ॥ २७ ॥  
 वरचिंतामणितुल्ले, तित्थयराई प्पहाणगुणकलिए ॥  
 पणमंतो सिरिसंघो, संचियदुरियाई नासेइ ॥ २८ ॥  
 पावई विउला रिद्धी, मंगलगणसिद्धिलद्धिकलाण ॥  
 ता णिच्चं पभणिज्जं, सोयव्वं सयलसंघेण ॥ २९ ॥  
 गुणंदणिहिंदुसमे, सिरिणेमिजिणेसजम्मकलाणे ॥  
 जिणवइसासणरसिप, जइउरीरायनयरंमि ॥ ३० ॥  
 सिरिचिंतामणिथुतं, गुरुवहरसिरिणेमिख्वरिसीसेण ॥  
 पउमेणायरिपणं, मुनिविमलानंदपठणट्ट ॥ ३१ ॥



# सम्युद्धर्ण

क्षेत्र—आचार्य महाराज श्रीमद् विजयप्रभस्तुरिण  
(गतांकथी चालु)

क्षायिक सम्युक्तवाणा ज्ञवेना थता १, ३, ४, ५, भवेना संयमभां दूँकामां आ प्रभाणे समजवुं—ज्ञेभणे आगामी भवनुं आयुष्य बांध्युं नथी एवा अभद्रायुष्ट ज्ञेने ज्ञेआ सम्युक्तव पामे तो तेओ ते ४ (छेल्ला) भवमां मोक्षे नय छे. अने ज्ञेभणे वैमानिक हेवायु अथवा नरकायु बांध्युं छे, एवा ज्ञवेने (आयु बांध्या पटी) क्षायिक सम्युक्तव पामे तो हेवभवमां अथवा नरकभवमां गया आह छेवटे भनुष्यमां आवी मोक्षे नय. एम क्षायिक दर्शनवाणा भव्य ज्ञवेन त्रण (१ नर भव, २ वैमानिक हेवनो अथवा नरकनो भव अने ३ नर भव) भवेना करे छे. तथा केटलाअेक क्षायिक दर्शनवाणा भव्य ज्ञवेन चार भव करीने पण मोक्षे नय छे, ते आ प्रभाणे—क्षायिक दर्शन चुणु पाम्या पहेलां ज्ञेभणे युगलिक तिर्थयोनुं अथवा युगलिया भनुष्योनुं आयुष्य बांध्युं छे एवा ज्ञवेने क्षायिक सम्युक्तवने पामे तो तेओ अनुक्ते पहेलो नरभवं पूर्ण थया आह भीने युगलियानो भव करे. पटी त्रीने हेव भव ४ करे. कारणु के युगलियायो अस्पक्यायोद्यवाणा हेवाथी भीउ त्रण गतियोमां नय नहि. (आ उपरथी एम समनय छे कें-क्पायोनी प्रश्नताथी हलका गतियोमां भटकवुं पडे छे.) छेवटे हेव भवमांथी चवीने चेथा भवमां भनुष्य थध पवित्र संयम पालीने ४ मोक्षे नय. तथा केटलाअेक क्षायिक सम्युक्तवाणा भव्य ज्ञवेन ४ष्टुराजन वगेरेनी भाइक पांचमे भवे पण मोक्षे नय. ते पांचे भवेनो ५ आ प्रभाणे ज्ञाणवेनो—(१) भनुष्यभव पुरो ५री (२) नरके नय त्यार आह (३) भनुष्य थध (४) हेवभवमां नय. (५) छेवटे भनुष्यभव पामी संयमना अलेने भुक्तिपद पामे. एम पूज्यपाद न्यायाचार्य भहेपाच्याय श्री. यशाविजयगुणियु महाराजे कर्मपृतिनी दीक्षामां रूपू (शब्दोमां) कहुं छे—तेमन उपाध्याय श्री समयसुंदरगणियु रचेला श्री विशेष शतक नामना अंथमां पणु आ प्रभाणे प्रक्रीतर रुपे ज्ञाणाव्यु छे—

**प्रश्न**—क्षायिकसम्युद्धिणि ४ष्टु वासुदेव अहींथी नरकायुना उद्देव त्रीउ नरकमां गया, त्यां वधारेमां वधारे सात (७) सागरोपमनुं आयुष्य होय छे—एतीउ आग्नु श्री नेभिनाथथी मांडीने आनती चौवीशीना आरमा तीर्थंकर (४ष्टु)नो अंतरकाल तेथी (७ सागरोपमथी) वधारे थाय छे, तो आ आभतमां शुं समजवुं ?

**उत्तर**—तमे ‘४ष्टु वासुदेव त्रीने भवे तीर्थंकर थशे’ ए आशयथी प्रश्न करो छे. समजवाणी ज्ञर छे केनरकमांथी नीकणी ४ष्टु वासुदेव नरभव करशे एटके अहीं भरतक्षेत्रमां शतकार नगरना जितशत्रु राजना पुत्र (भंडलिक राज) थशे. दीक्षा साधी तीर्थंकर नाम कर्म निकायित करीने पांचमा अबहेवकोंक दश सागरोपमना आयुवाणा हेव थशे. त्यारआह अहीं नरभव पामी आरमा ‘अभम’ तीर्थंकर थशे. एम श्री. संघदासगणियु दृत वसुदेवलिडी नामना अंथ उपरथा समज शकाय छे. ज्ञुओ आ

आंक ७ ]

सम्युक्तशोन

[ २३६ ]

खें ते साक्षिपाठ—“ १ कण्हा तद्याप पुढवीए उच्छित्ता, इहेव भारहे वासे  
सयदुवारे नयरे जियसत्तुस्स रण्णो पुत्तताप उववज्जिज्ञ पत्तमंडलियभावा  
पव्वज्जं पडिवज्जिय तिथ्यथरनामकम्मं समजजणित्ता बंभलोए कप्पे दस-  
सागरोवमाऊ (देवो) होऊण तओ चुओ बारसमो अममो नाम अरिहा  
भविस्सइ । ” अने रत्नसंथमां पणु तेमज उच्चुं छे.

(३) क्षायोपशभिक सम्युक्तव—पहेलां क्षेली साते प्रटृतिआभां ज्यारे ६  
प्रटृतिआनो इक्त प्रदेशोहय अने सम्युक्तव भोहनीयनो रसेाहय चालतो होय ते प्रसंगे  
ने अद्वायु प्रकट थाय, ते क्षायोपशभिक सम्युक्तश्चन क्षेलेवाय. आवा प्रकारतुं सम्य-  
ज्ञश्चन आभा भवयक्तमां असंग्यातीचार पभाय छे. अने ऐक भवमां धुधी उन्नर  
(वाणुं करीने ६०००) वार पाभी शकाय छे. आ दर्शनगुणु ओछाभाओछा अंतर्मुहूर्त  
सुधी अने वधारेमां वधारे ६६ सागरोपभयी पणु अधिक वधत सुधी टक्के छे. तथा  
चोथायी सातमा सुवीना यार गुणुस्थानकोभां ४ आ क्षायोपशभिक दर्शन होय छे, परंतु  
आगणना गुणुस्थानकोभां नथी होतु. त्यां तो क्षायिक अथवा औपशभिक सम्युक्तव ४  
होय. क्षायोपशभिक दर्शनवाणा ज्वो ने सारा परिणामनी धारामां आगण आगण  
वधता ४ ज्य, तो क्षेत्रायेक ज्वो क्षायिक दर्शनने पणु पामे छे. आ अपेक्षाए आ  
दर्शनगुणु वृद्धिवाणा क्षेलेवाय छे. अने ऐ ४ ज्वो ने अराय परिणामनी धारामां आगण  
आगण वधता ज्य, तो भिथ्यात्वने पामे छे, भाटे ४ आ गुणु प्रतिपाति पणु कडी  
शकाय छे.

(४) सास्वादन सम्युक्तव—औपशभिक सम्युक्तवयी ४ पडता ज्वोने भिथ्यात्व  
गुणुस्थानके गया पहेलां ओछाभांओछा १ समय सुधी अने वधारेमां वधारे ६ आवलिका  
सुधी ने अद्वान (आरथा) गुणु होय ते पडतो अद्वा गुणु सास्वादन सम्युक्तव क्षेलेवाय,  
ऐट्के—अनन्तातुरुभिं डपायना उद्दयवाणा औपशभिक नम्यगृहृष्टि ज्वने भिथ्यात्वनो  
उद्य थया पहेलां ने अद्वा गुणु होय ते सास्वादन सम्युक्तव क्षेलेवाय. आवा सम्युक्तवने  
शास्त्राकार भगवते प्रतिपाति दर्शन क्षुचुं छे अने ते व्याजभी छे, कारणुके औपशभिकथी  
पडता ज्वोने आ सम्युक्तव होय छे, तथा भीना सास्वादन गुणुस्थान के ४ आ  
सम्युक्तव होय छे. ते जबन्यथी, १ समय सुधी, उद्दाट्टथी ६ आवलिका सुधी टक्के छे.  
आवुं सम्युक्तव आवा भवयक्तमां पांच वार ४ अने ऐक भवमां ऐ वार पाभी शकाय छे.

(५) वेदक सम्युक्तव—शास्त्राकारे आसम्युक्तवने क्षायोपशभिक सम्युक्तवना लेह  
तरीक्त गण्डुं छे. अने ते व्याजभी छे, कारणुके वधता शुभ परिणामवाला क्षायो-  
शभिक सम्युक्तविति ज्वोने अनुक्तमे अननंता वगेरे ६ प्रटृतिआ अपावीने छेवटे सम्य-

१. अहों दीप्तीमां ज्ञानायुं छे के—“ विचारान्तर ऐम पणु छे के—इध्यतुं त्रीळ नरकमां  
ज्वन्य नणु सागरोपमतुं आयु छे, अने अद्व हेवेकमां सात सागरोपमना आसुवाणा देव  
थरो माटे अमम तीर्थकर समये अलबद्र सिन्ध थरो—ऐम संबन्धे छे.

२. आ भीना लाणुने ऐम निक्षय करनो के—क्षायोपशभिकमां ६ नो प्रदेशोहय अने सम्य-  
क्त १ मोहनीयनो रसेाहय होय, परंतु औपशभिक दर्शनमां तो सातमांनी कोष पणु प्रटृतिनो  
अने रीते पणु उद्दय न ४ होय. ऐम ऐ ई दर्शनमां लेह छे.

इति भोग्नीयने अपावतां छेद्वा समय एटले क्षागोपशमिकना छेद्वा समये ने अद्धा होय ते वेदक सम्यक्त्व कहेवाय. आ सम्यक्त्वनो वर्णत जग्नयथी अने उत्तेष्ठथी अम अने रीते एक समय ज जाणुवो. आवुं सम्यक्त्व—एक वार ज पामी शकाय, चाथाथी भांडीने सातमा सुधीना आरे गुणस्थानकेअं आ सम्यक्त्व होए शके छे. आ दर्शनने वृष्टिवाणुं कहुं छे ते व्याजभी छे, कारणुके एक समय वीत्या बाह तरत ज शुभ परिणामे वधता वेदक दर्शनवाणा ज्ञावा क्षायिक दर्शनने पामे ज छे. वेदक दर्शनवाणा ज्ञावा नीचे भिथ्येवे जय ज नहि. !

पूज्यपाद श्री तीर्थंकर देवे जुही जुही विवक्षाना प्रकारै जाणुवावा मारे ज्ञावाना भेदानी भाइक सम्यग्दर्शन गुणना पणु एकथी भांडीने पांच भेदो कब्जा छे. तेमां पांच भेदोनुं स्वृप्त कहुं. भांडीना—१, २, ३, ४ भेदोनुं अनुक्रमे आ प्रभाणे स्वृप्त जाणुवुं.

पूज्य श्री निनेश्वर देवे कहेलां तत्त्वानी उपर ने विश्वास राख्वे ते तत्त्वशङ्कान स्वृप्त भेदानी अपेक्षामे सम्यक्त्व एक प्रकारनुं कडी शकाय.

### सम्यक्त्वना वे भेदो—त्रणु रीते थृष्ठ शके छे :-

१-(१) निसर्ग ( स्वाभाविक ) सम्यक्त्व अने. (२) अधिगम (औपदेशिक) सम्यक्त्व.

२-(१) नैश्चयिक सम्यक्त्व अने (२) व्यावहारिक सम्यक्त्व.

३-(१) द्रव्य सम्यक्त्व अने (२) भाव सम्यक्त्व.

आ कहेला छमे प्रकारैतुं स्वृप्त आ प्रभाणे जाणुवुं :—

१. नैसर्गिक सम्यक्त्व पूज्यश्री गुरु भद्राराज वगेरेना उपहेशाहि सांभज्या विना पणु, स्वलावे अनन्तानुभांधि आहिना क्षयोपशम वगेरे थवाथी ने अद्धा गुण प्रकटे ते स्वाभाविक दर्शन अथवा नैसर्गिक सम्यक्त्व कहेवाय. ३

२. अधिगम सम्यक्त्व—जेतुं स्वृप्त नैसर्गिक सम्यक्त्वथी उद्दुं छे-एटले गुरु भद्राराज वगेरेना उपहेशाहि सांभज्यावुं वगेरे साधनोदारा ने सम्यक्त्व थाय ते अधिगम सम्यक्त्व कहेवाय. आ सम्यक्त्वनुं अीजुं नाम औपदेशिक सम्यक्त्व जाणुवुं. आ वाखत ज्ञावा श्री तत्त्वार्थसूत्रनुं वयन—॥ “तत्रिसर्गादधिगमाद्वा” ॥

१. व्यवहार सम्यक्त्व—हेवपूजा, तीर्थयात्रा वगेरे व्यवहार प्रवृत्तिस्वृप्त, सम्यग्दर्शनने प्रकटावनारां साधनोनी ने सेवना कर्वी, ते व्यवहार सम्यक्त्व कहेवाय. आ ज अर्थने दुकामां अम कडी शकाय के आत्माना ज्ञान दर्शनाहि गुणमय शुद्ध परिणामथी ने प्रकट थाय ते व्यावहारिक सम्यक्त्व कहेवाय.

२. नैश्चयिक सम्यक्त्व—आत्मानो ज्ञान दर्शनाहि गुणमय ने शुद्ध परिणाम तेनु नाम नैश्चयिक सम्यक्त्व कहेवाय.

१. द्रव्य सम्यक्त्व—परमाथाने नहि जाणुनारा भव्य ज्ञवनी—“हेवाधिहेव श्री तीर्थंकर परमात्मामे ने अीना कडी ते सत्य छे,” आवी अद्धा ते द्रव्य सम्यक्त्व

३. आ आपावती द्रष्टव्यांत सहित विचारणा—जाणुना मारे ज्ञावा—

द्रव्यवेक्षकप्रकाश सर्व तीजना ६६०थी ६६४ सुधीना श्वेका.

આંક ૭]

## સમ્યક્તવાન

[૨૪૭]

કહેવાય. આ દ્રોય સમ્યક્તવની ઓળું રીતે એમ પણ વ્યાપ્તિ સમજવી કે-દ્રોય એટલે ને સમ્યક્તવ મોહનીયના મુહગદેા છે, તેઓનો જ રસોદ્ધ ચાનું છતાં ને અદ્ધા હેઠાં તે દ્રોય સમ્યક્તવ કહેવાય. આવો અર્થ ક્ષામોપશમિક સમ્યક્તવમાં જ ઘટે છે માટે એ પૌહગલિક હોવાથી દ્રોય સમ્યક્તવ કહેવાય.

૨. ભાવસમ્યક્તવ—જીવાહિ નવે તરવોને<sup>૫</sup> જાણવા પૂર્વક શ્રી વીતરાગ પ્રભુના વચ્ચેની અદ્ધા રાખવી તે ભાવ સમ્યક્તવ કહેવાય. અથવા દ્રોય સમ્યક્તવથી ઉદ્દૃઢાને સમ્યક્તવ તે ભાવસમ્યક્તવ કહેવાય. એટલે જેમાં દર્શન સપ્તકનો<sup>૬</sup> પ્રદેશોદ્ધ તેમ જ રસોદ્ધ પણ ન જ હોય તે ભાવ સમ્યક્તવ કહેવાય. આવા પ્રકારનું સ્વરૂપ તો એ સમ્યક્તવ (ક્ષાયિક અને ઔપશમિક)<sup>૭</sup> જ હોય છે, એથી ભાવ પરિણૃતિ રૂપ અપૌહગલિક એવા ક્ષાયિક અને ઔપશમિક દર્શનને ભાવ સમ્યક્તવ તરીકે ગણ્યું છે.

## ત્રણ ભેદનું એ રીતે સ્વરૂપ

૧—(૧) કારક સમ્યક્તવ—શ્રીતીર્થંકર દેવે કહેલી—“ દેવ પૂજન, યાત્રા, શાસન પ્રમાવના વગેરે સમ્યક્તવની કરણી કરવી તે કારક સમ્યક્તવ કહેવાય. (૨) રોચક સમ્યક્તવ—પ્રથમ મોહનીય કર્મના ઉદ્ધ્વ વગેરે કારણોને લઈને-કદ્દાય કિયા ન કરે, પણ તેવા પ્રકારનો જીવ શ્રી વીતરાગ દેવે કહેલાં તરવોની ઉપર ને પ્રેમભાવ રાખે, તેનું નામ રોચક સમ્યક્તવ કહેવાય. (૩) દીપક સમ્યક્તવ—પોતે અદ્ધા વિનાનો હોય, છતાં સામા જીવને સમજાવવામાં હોશિયાર હોવાથી ને સમ્યક્તવ પમાડે, તે દીપક સમ્યક્તવ કહેવાય. આ સમ્યક્તવ જેમ કેટલાએક ભવ્ય જીવને હોય છે, તેમ અભવ્ય જીવને પણ હોય છે. (જુઓ પાનું ૨૪૨)

૪. સંઘયાની અપેક્ષાએ સ્વાદ્વામતાવદંબિ ભવ્ય જીવો—શ્રી ભગવતી વગેરે સ્વર્ગોની સાક્ષિએ પ્રમાણસિદ્ધ નવ તરવો માને છે. ને કે શ્રીયોગશાસ્ત્રની રીતા અને સમયસાર પ્રકારણ વગેરે અનેક શાસ્ત્રોમાં સાત તરવો કહેલ છે. તો પણ તે ભીના શાંકાને ઉપરને જ નહિ, કારણું કે પુષ્ય તરવને શુભાશ્વ તરીકે અને પાપ તરવને ગુણુભાશ્વ તરીકે ગણુંને આશ્વ તરવમાં પુષ્ય પાપ તરવનો સમાવેશ કરીને સાત તરવો કહ્યાં છે. એમ એક ભીનમાં સમાવેશ કરવાથી તો પાંચ અને એ તરવો પણ કહેવાય છે. પરંતુ યથાસ્થિત ભાવે (ખરી રીતે) તરવો નવ જ છે. તેમાં અર્પણ યુક્તિ આ પ્રમાણું જાણવી-નવ (૬) એ અભેદ સંઘ્યા છે. તે કોઈ પણ સંઘ્યાએ ગુણ્યા પણી સરવાળો તે (ગુણ્ય સંઘ્યા)ના જેઠેઓ જ થાય, તે અભેદ સંઘ્યા કહેવાય. દ્વારાલા તરીકે ૬ સંઘ્યાને ૪ આ સંઘ્યા એ ગુણુવાથી ૩૬ (ગુણુકારમાં) આવે, હવે આ એ (૩ અને ૬)નો સરવાળો કરવાથી ૬ અંક આવે અને ગુણ્ય સંઘ્યા પણ તેથી જ છે. એમ-૬ અંકને કોઈ પણ સંઘ્યાએ ગુણ્યા પણી ગુણુકારના અંકો (અંકડાં)નો સરવાળો ગુણ્ય (૬) સંઘ્યા જેઠેઓ જ થશે, માટે ૬ અંકને અભેદ સંઘ્યા તરીકે અણગાવવામાં આવે છે. ૬ સિવાયની સાત (૭) વગેરે અંકો ને કોઈપણ સંઘ્યાએ ગુણ્યા પણી ગુણુકારના અંકોનો સરવાળો જેઠેઓ થાય તેથી જ ગુણ્ય સંઘ્યા થતી નથી. જુઓ ૮૪૭-૪૬, ૫૫૬-૧૧ વગેરે.

૫. અનંતાનુંધિ કોધ, માન, માચા, લોલ એ ચાર પ્રકૃતિઓ અને ત્રણ દર્શન મોહનીયની ૧-સમ્યક્તવ મોહનીય, ૨-મિશ્ર મોહનીય, ૩-મિથ્યાત્વ મોહનીય એમ સાત પ્રકૃતિઓનું દર્શનસંખ્તક કહેવાય.

## समीक्षाभ्रमाविष्करण

[ याने दिग्म्बरमतानुयायी अजितकुमार शास्त्रीए 'श्वेताम्बरमतसमीक्षा'मां आलेखेल प्रश्ननो प्रत्युत्तर ]

लेखक—आचार्य महाराज श्रीमद् विजयलालावण्यसूरिजी

( क्रमांक २९थी चालु )

साधु क्या कभी मांसभक्षण भी करे ?

श्वेताम्बर आगमो मांसभक्षणनी पुष्टिना पंथे प्रयाण करनार छे एम पुरवार करवा कटीबद्ध बनेल आशाम्बर लेखके अबलम्बेल पाठावलीमांनो प्रथम पाठ—

“ वासावासं पज्जोसवियाणं नो कप्पइ निगर्णथाणं वा निगंथीणं वा हट्टाणं आरुग्गाणं बलियसरीराणं इमाओ नव रसविगइओ अभिक्खणं अभिक्खणं आहारित्तप । तंजहा-खीरं दहिं नवणीयं सर्पिप तिलङ गुडं महुं मज्जं मंसं ॥ ”

[ वर्षावासं पर्युषितानां न कल्पते निर्वन्धानां वा निर्धन्थीनां वा हष्टानामारोग्याणां बलवच्छरीराणामिमा नव रसविकृतयोऽभिक्षणमभिक्षणमाहारयितुम्, तथ्या—१ श्वीरं २ दधि ३ नवनीतं ४ सर्पिः ५ तैलं ६ गुडः ७ मधुं ८ मध्यं ९ मांसम् । ]

आ पाठ चतुर्दशापूर्ववित् श्रुतकेवली भगवान् भद्रबाहुस्वामी महाराजे पूर्वार्णवमांथी उद्धरेल श्रीदशाश्रुतस्कंधना आठमा अध्ययननो छे. आ आठमुं अध्ययन एटले परमपावन सकलशास्त्रशिरोमणि कल्पतरुकल्प श्रीकल्पसूत्र !

**उपर्युक्त पाठनो संक्षिप्त भावार्थः—**

यौवनवनमां विचरता, रोगमुक्त अने बलिष्ठ देहने धारण करता एवा चोमासुं रहेल साधु साध्वीने नव रसविगइओ वारंवार खाची कल्पे नहि. आ नव रसविगइओनां नाम-दुध, दहिं, माखण, घी, तेल, गोल, मध, मदिरा अने मांस । आ पाठ विगइओनो निषेध करे छे, अतएव वाक्या-

( २४८-भा पानानुं अनुसंधान )

२—(१) औपशमिक सम्यक्त्व, (२) क्षायेपशमिक सम्यक्त्व, (३) क्षायिक सम्यक्त्व ऐभ पछु सम्यक्त्व त्रयुं प्रकारे कहुं छे. आ त्रये लेहोनी अर्थ विचारणा विस्तारथी पहेलां जाण्यावी छे.

**यार लेहो—**—उपर ज्येष्ठावेळा त्रये लेहोमां जे सारवाढन सम्यक्त्व उभेरीअे तो सम्यक्त्वना यार लेहो थर्हि शके छे. (यारेनुं स्व॒३५ पहेलां कहुं छे.)

**पांच लेहो—**—उपर उलेला यार लेहोमां वेदक सम्यक्त्व उभेरीअे तो सम्यक्त्वना पांच लेहो थर्हि शके छे. (अपूर्ण)

[४५ ७]

## सभीक्षाभिभाविष्टरण

[२४३]

थपर्यवसायक 'नो कप्पइ' शब्दो मुकेला छे. आ निषेधस्त्रने मांसभक्षण-विधायक विधिस्त्र तरीके वर्णवाचुं ते खरेखर तेजोराशिने तमोराशि कहेवा जेवुं छे।

## लेखकनी दलिल

आ उपर्युक्त कल्पग्रन्थनो पाठ, कोई पण व्यक्ति, कदाचित् पण, आ नव रसविगड्हो न खाय एम सर्वथा निषेधतो नथी. किन्तु निमित्तविशेषो बतावीने निषेधे छे. माटे आ उपर्युक्त प्रसंगमां नव रसविगड्हो न बापरवी अर्थात् आथी अतिरिक्त प्रसंगमां बापरवी एम अर्थापत्तिथी मांसभक्षणविधायक विधिस्त्र तरीके केम न मानी शकाय?

## दलिलनी पोकलता

अर्थापत्तिथी अर्थान्तरनो आक्षेप करनार मानवीने अर्थापत्तिनी अन्य-थानुपपद्यमानत्वरूप जन्मभूमिनुं निरीक्षण करवानो जस्तर छे.

यथा-'पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्कते' अत्र रात्रिभोजनं विना पीन-त्वमनुपपद्यमानं सन् रात्रिभोजनमाक्षिपति।

कोई वक्ताना वदनारविद्मांथी वचनावली निकली के लष्ट पुष्ट बनेल देवदत्त दिवसे खातो नथी, आ सांभली निकटवर्ती श्रोता विचारे छे के आहार सिवाय लष्ट पुष्टपण्यु होई शकतुं नथी. अने दिवसे खावानी ना पाढे छे. माटे आ बाक्य एम जणावे छे के-देवदत्त रात्रे खाय छे। प्रस्तुतमां अन्यथानुपपद्यमानत्व नथी [ बीजी रीते पाठनुं संगत न थवुं तेम नथी, ] अर्थात्-प्रस्तुत पाठनो प्रत्येक ध्वनि हेतुता गर्भित छे जे अमो आगळ वांचकर्वग्नी आगळ मुकीशुं। अन्यथानुपपद्यमानत्व सिवाय पण जो अर्थापति इष्ट करी लेवामां आवे तो पोताना ज दिगम्बर ग्रन्थोमां अनेक बुंचवणना जावा ओमां बुंचावुं पडशो, जेमके-श्रावकने आश्रीने स्थूलप्राणातिपातविरमण ज्यां दिगम्बर ग्रन्थमां बतावेल होय त्यां सूक्ष्म जीवोने मारवा एम, अर्थापत्तिथी ते शास्त्रने हिसाविधायक मानवुं पडशो।

## प्रस्तुत पाठ विगड्होने शा माटे निषेधे छे?

मुनिवरो माधुकरीवृत्तिथी आहार लेनार होय छे. अतपव गृहस्थने त्यां कुदरते जे जे आहार मळे ते लावीने बापरवो जोईए आम छतां विगड्होने शा माटे बाद करी? आ विगड्हो चित्तनी विकृति करी दुर्गतिमां दोरी जाय छे. जुओ महापुरुषनां वचनामृतो—

विगड्हं विगड्हं भीओ विगड्हगयं जो य भुंजप साहूं।

विगड्हं विगड्हसहावा विगड्हं विगड्हं बला नेइ ॥१॥"

[ विकृतिं विकृतेर्भीतो विकृतिगतं यश्च भुङ्क्ते साहुः ।

विकृतिर्विकृतिस्वभावा विकृतिर्विगति बलान्नयति ॥१॥ ]

अर्थ—दुर्गतिना भीरु कोई पण साधु जो दुध बगेरे विर्गइओने अथवा खीर बगेरे विकृतिगत वस्तुने वापरे तो ते विर्गइओ तेने बलात्कारे दुर्गतिमां दोरी जाय छे. कारण? आ विर्गइओ छे ते चित्तनी विकृतिने करवाना स्वभाववाली छे।

### प्रस्तुतमां अनुपयोगी विर्गइओनां नाम शा माटे ?

मध, माखण, मांस अने मदिरा तो मुनिजनने दीक्षादिनथी त्याज्य ज होय छे. फक्त दुध, दहिं, घी, गोल्ड अने तेल कल्प्य छे, तेनो ज उपर्युक्त व्यक्तिने निषेध करवो उचित हतो, आम नहि करतां मध, माखण, मांस अने मदिरानां पण नामो शा माटे गणाव्यां?

यद्यपि मुनिराजने अंगे दुध, दहिं, घी, गोल्ड अने तेल ज निषेधवानी आवश्यकता छे, छतां पण आ कल्प्य विर्गइओ जेम विकृतिने करनारी छे तेम मध, माखण, मांस अने मदिरा रूप अकल्प्य विर्गइओ पण विकृति करनार होवाथी विकृतिभावनी साम्यताने लईने विर्गइना दण्डक पाठने अखंडित राखवा दुध, दहिं बगेरे कल्प्य विर्गइओनी साथे महाविर्गइ जे मध, माखण, मांस अने मदिरा तेनां पण नामो गणाव्यां छे। प्रस्तुतमां उपयोग न होय छतां पण दण्डक पाठने अखंडित राखवा नामो गणाववामां आवे छे. आ ज कलपसूत्रमां परमात्मा महावीर देवनुं समितिगमित वर्णन करतां नीचे प्रमाणे जणावे छे—

“ईरियासमिए भासासमिए पसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणा-समिए उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिद्वावणियासमिए ।”

आ पांच समितिमानी अन्त्य बे समितिने माटे टीकाकार महाराज नीचे प्रमाणे जणावे छे—

“एतच्च अन्त्यसमितिद्वयं भगवतो भाण्डसिंघानाद्यसंभवेऽपि नाम-खण्डनार्थमित्थमुक्तम् ।”

अर्थ—जो के परमात्माने भाजन तथा नासिका मेल बगेरेनो संभव नथी छतां पण समितिना दण्डक पाठने अखंडित राखवा माटे छेली बे समितिनां नाम गणाव्यां छे।

सारांश ए छे के—मध, माखण, मांस अने मदिरा तो दीक्षादिनथी त्याज्य ज छे, अने विकृतिभावनी साम्यताने लईने विकृतिनो दण्डक पाठ अखंडित रासवा पुरता मध, माखण, मांस अने मदिरानां नाम आपेल होवाथी उपर्युक्त पाठनो फलितार्थ एवो थशे के मांस, मदिरादिकना त्यागी उपर्युक्त मुनिने वारंवार दुध, दहिं, घी, गोल्ड अने तेल खावां कलपे नहि, परंतु उपर्युक्त मुनिने वारंवार नव विर्गइओ खावी कलपे नहि एवो अर्थ न करवो।

अमे करेला अर्थने पुष्टि आपतो चतुर्दशपूर्ववित् श्रुतकेवली भगवान  
शयम्भवस्त्ररि महाराजे रचेल दशवैकालिकस्त्रवनो चूलिकानो पाठ जुओः—

“ अमज्जमांसासि अमच्छरीय अभिक्खणं निविग्दं गया अ ।

अभिक्खणं काउस्सगकारी, सज्जायज्ञोगे पययो हविज्ञा ॥ ७ ॥ ”

अर्थ—मांस अने मदिराना त्यागी, परसंपत्तिमां द्वेषरहित, वारंवार विगड्हनो त्याग करनार, अर्थात्—पुष्टालंबने कदाचित् वापरनार पुनः पुनः कायोत्सर्ग करनार मुनि स्वाध्याय योगमां उच्चमवन्त रहे । अनुक्तसमुच्चायक चकार मानवाथी मध अने माखणना त्यागी, पवो अर्थ पण जोडी शकाय ।

आ पाठमां विगड्ह अने काउस्सगमां वारंवार अर्थने जणावनार ‘ अभिक्खणं ’ शब्दनी योजना करी छे. परंतु मांस मदिरामां नहि. अत एव अमो जे अर्थ करी आव्या छीप तेने आ पाठ पूरेपूरो टेको आपे छे ।

**सकलमुनिवरोने विगड्हओनो निषेध केम नहि ?**

विगड्हओ विकृति करी दुर्गतिमां लई जनार छे तो पछी सकल मुनि-वर्गने तेनो निषेध करवो जोइए, आम नहि करता यौवनवनमां विचरता, रोगमुक्त, बलिष्ठ देहवालाने ज माटे केम कर्यो? शु अन्य मुनिवरोने उपर्युक्त दोषथी बचाववा नथी ?

आ कल्पस्त्रवनो पाठ विगड्ह निमित्ते थती जे चित्तनी विकृति अने तैने लड्हने थती जे दुर्गति तेनाथी बचाववा माटे छे. आ विकृतिनी संभावना प्रायः उपर्युक्तमां छे, कारण के जे माणस जुवान छे, नीरोगकाय छे अने वली बलिष्ठ छे, तेवो माणस वारंवार जो विगड्हओ खाय तो चित्तनी विकृति थाय ए स्वाभाविक छे, अने दुर्बल, बुद्ध, ग्लान अने तपस्वी वर्गेरेने विगड्हओ वापरवामां प्रायः विकृतिनो संभव नथी, एटलु ज नहि परंतु धर्मसाधन शरीरने टकावी राखवा सहायक बने छे, कारण के ज्यां मूळ शरीरमां ज त्रुटि छे त्यां विगड्ह मात्रथी विकृति होई शके नहि । सारांश ए छे के ज्यां विकृतिनी संभावना होय त्यांनो निषेध उचित गणाय पण सर्वत्र नहि ।

**पाठोक्त व्यक्तिने सर्वथा निषेध केम नहि ?**

यौवनवनमां विचरता रोगमुक्त बलिष्ठदेहवाला मुनिने विगड्ह भक्षणमां विकृतिनी संभावना छे, तो सर्वथा निषेध करवो जोइए. आम नहि करतां, वारंवार खावी न कल्पे एम शा माटे निषेध कर्यो ?

उपर्युक्त मुनिए कदाचित् कारणे कोईवार विगड्ह वापरी होय तो ते चित्तनी विकृति करो दुर्गतिना साधनभूत प्रायः बनती नथी, परंतु वारंवार खावामां आ स्थिति बने छे, माटे सर्वथा निषेध नही करता वारंवारने माटे निषेध करेल छे ।

## पाठोक्त व्यक्तिने सर्वदा निषेध केम नहि ?

उपर्युक्त कल्पसूत्रना पाठमां धर्णवेल व्यक्तिओने वारंवार विगड्हो वापरवामां जो विकृतिनी संभावना छे तो सर्वदाने माटे निषेध करवो उचित हतो, आम छतां चोमासाने माटे ज केम निषेधः कर्यो ?

आ प्रस्तुत पाठवाळा कल्पसूत्रना एक विभागमां चोमासु रहेल साथू साध्वीने उहेशीने अनेक विषयो प्रतिपादन कर्या छे. आ चतुर्मास प्रतिबद्ध विभागमां प्रस्तुत पाठ होवाथी चोमासु बतावेल छे। अथवा चोमासा सिवायना कालमां विहारादिकना परिश्रमने लईने वारंवार वपराती विगड्हो पण विकृति कर्या सिवाय सारी रीते पची जाय, परंतु चोमासाना कालमां विहारादिकना परिश्रमना अभावे विकृतिनो संभव छे, माटे शेष कालमां नहि निषेधतां चोमासामां निषेधेल छे।

## प्रस्तुत पाठनी प्रकारान्तर योजना

महापुरुषनां गम्भीर वचनो अनेक व्याख्यागर्भित होय ए स्वाभाविक छे, अत एव टीकाकार महाराज छेदसूत्रनै सामे राखी नीचे प्रमाणे निषेध प्रतिपादन करे छे—

“ यद्यपि मधुमद्यमांसनवनीतवर्जनं यावज्जीवमस्त्येव तथाप्यत्यन्तापवाद-दशायां बाह्यपरिभोगार्थं कदाचिद् ग्रहणेऽपि चतुर्मास्यां सर्वथा निषेधः । ”

सामान्य अर्थ—जो के मुनिजनोने मध, माखण, मांस अने मदिरानुं वर्जन यावज्जीवने माटे होय छे, छतां पण अत्यन्त अपवाद दशामां कदाचित् बाह्य उपयोगने अर्थे ग्रहण कराय तो पण चोमासामां तो तेनो सर्वथा निषेध ज समजबो ।

टीकाकार महर्षिना आशयने नहि समजनार आशाम्बर लेखके करेल आक्षेप—

“ टीकाकारने महाहिंसाके आक्षेपसे वचनके अभिप्रायसे शरीरके बाहरी उपयोगके लिये मांस सेवन बतलाया सो कुछ समझमें नहि आया, क्यों कि मांस कोई तेल नहीं जिसकी चमडे पर मालिश हो और न वह मलहमका ही काम देता है ! ”

लेखकनो आ आक्षेप तेनी स्थूल दृष्टिने मुबारक हो ।

## टीकाकार महर्षिना वचन पर विशेष प्रकाश

अमो प्रथम प्रकारमां जणावी गया हता के विगड्होनो दण्डक पाठ अखण्डित राखवा माटे मध, माखण, मांस अने मदिरानां नामो गणाव्यां छे, प्रस्तुतमां तेनो उपयोग नथी । टीकाकार महाराज आ प्रकारने नहि अडकता प्रकारान्तर ले छे, तेमां एम जणाववा मांगे छे के मध, माखण, मांस अने मदिरानो पाठ प्रस्तुतमां पण उपयोगो छे. शो उपयोग छे ?

अंक ७ ]

सभीक्षाभिभाविकरण

[२४७]

छेदसूत्रथी ग्रास जे मांसनो बाह्य उपयोग तेनो निषेध. अर्थात्-चोमासा सिवायना काळमां अत्यन्त अपवाद दशाए बाह्य परिभोगोने अर्थे कदाचिद् मांसादि उपयोगमां लेवातां होय तो पण चोमासामां तो तेनो सर्वथा निषेध समजबो। टीकाकार महाराजनुं आ व्याख्यान पण मांसादिकनो निषेध ज करे छे, विधि तो कोई बतावतुं नथी ।

आ व्याख्यान पक्षमां ‘वारंवार’ अर्थ अने ‘हट्टाण’ वर्गेरे विशेषणो दुध, दंहि, घी, गोल अने तेलने आश्रीने समजबां. अने मध, माखण, मांस अने मदिराने आश्रीने केवल निषेध समजबो. त्यारे अर्थ एवो थशे के—

१ यौवनवनमां विचरता गोगनिर्मुक्त बलिष्ठ देहवाळा चोमासु रहेल साधु साध्वीने वारंवार दुध, दंहि, घी, गोल अने तेल कल्पे नहि ।

२ चोमासु रहेला सायु साध्वीने बाह्य परिभोगने अर्थे पण मध, माखण, मांस अने मदिरा कल्पे नहि ।

### टीकाकारनी वचनसरितामां तरती बे तरीनुं निरीक्षण

१ मांसना बाह्य उपयोगने माटे अपवाद होई शके छे ।

२ मांस बहारना उपयोगमां आवी शके छे ।

आ बे बावतोनो आशाम्बर लेखक इन्कार करे छे, ज्यारे अमो एने मानीए छीए ।

प्रथम बावतमां जणाववानुं जे अपवाद सिवायनो उत्सर्ग अने उत्सर्ग सिवायनो अपवाद होई शकतो नथी.

“यावन्ति उत्सर्गपदानि तावन्त्येव अपवादपदानि, यावन्ति अपवाद-पदानि तावन्त्येव उत्सर्गपदानि.”

जेटलां उत्सर्गनां स्थान तेटलां ज अपवादनां स्थान छे, अने जेटलां अपवादनां स्थान तेटलां ज उत्सर्गनां स्थान छे.

‘उत्सर्गपवादौ देहच्छायावन्मिथः संवलितौ’

शरीर अने पड्छायानी जेम उत्सर्ग अने अपवाद परस्पर गाढ संबन्ध धरावनारा छे. विशेषता ए छे के उत्सर्ग धोरी राजमार्ग छे त्यारे अपवाद कादाचित्क छींडी छे. कोई विकट प्रसंगे आ छींडी राजमार्ग करतां पण विशेष लाभदायक निवडे छे.

ए वात तो निर्विवाद छे के जगद्वत्सल परमात्मा महावीरदेवना शास-ननी वैजयन्ती हजारो वर्ष सुधी विजयवन्त रहेवानी छे. आ दीर्घकालनी विस्तीर्ण भूमिकामां केई केई जातनी विकट परिस्थितिओ उपस्थित थाय ए स्वाभाविक छे. आ विकट परिस्थितिमां पण संयम गुणनी यतना राखबो ए मुनिवरोनुं अविस्मरणीय लक्ष्य छे. कालादिकना अप्रतिप तरंगोनुं आंदोलन संसारना स्थिरतर भावोने पण अवनवा स्वरूपमां नचावे छे. कदाच एवी पण कोई ग्रथिल परिस्थिति केम न उपस्थित थाय के जेमां

[२४८]

श्रो जैन सत्य अकाश

[ वर्ष ३

कोई व्यक्ति विशेषने उत्सर्गमार्गथी संयमगुण अबाधित न रही शकतो होय अने अपवादिक मार्गथी रही शकतो होय ? आवा विकट प्रसंगमां संयमगुणने लक्ष्यमां राखीने आपवादिक मार्ग आचरे तो संयमगुणना निर्वाह साथे आराधकता जे छे, कारण के भावनी निर्मलता अने संयमगुणनी अबाध्यता ए तेनु अवन्ध्य लक्ष्य छे. आराधकता अने विराधकतानी मुद्रा भावनाने आधीन छे. आ बात दिगम्बर शास्त्रोमां वर्णित शिवकुमारादिना हृष्टान्तथी पण समजी शकाय तेवी छे.

प्रस्तुतमां आशाम्बर लेखकने पुछवामां आवे छे तमारा दिगम्बर शास्त्रोमां मांस-त्यागनो उत्सर्ग मार्ग ‘राजमार्ग’ छे या नहि ? जो छे तो तेनो अपवाद जरूर मानवो जोइप. कारण ? अपवाद विनानो उत्सर्ग होई शकतो नथी. आ बातनो इन्कार आशाम्बर लेखक करी शके तेम नथी, कारण ? दिगम्बर ग्रन्थकारोप आ बातने विना संकोचे स्वीकारी छे, जुओ दिगम्बर ग्रन्थ प्रवचनसारवृत्ति—

“ तत्र श्रेयान् अपवादनिरपेक्ष उत्सर्ग इति परस्परं सापेक्षोत्सर्गपवाद-रूपत्वात् स्याद्वादस्य । ”

भावार्थ—अपवाद सिवायनो उत्सर्ग कल्याणकारी नथी, कारण के परस्पर अपेक्षा राखता जे उत्सर्ग अने अपवाद तन्मय स्याद्वाद छे.

आ उपरथी शुं जणावे छे के अपवाद निरपेक्ष उत्सर्गने माननार जैन-दर्शनना मूलभूत जे स्याद्वाद तेना पर कुठाराधात करे छे। आ आशाम्बर लेखके पोताना दर्शनना ग्रन्थो जोवानो पण पूरो अवकाश लीधो होय तेम जणातुं नथी. कदाच लीधो होय तो बुद्धिए स्थान आप्युं जणातुं नथी. दिगम्बर शास्त्रे, कारणे अनेक अपवादिक वस्तुने स्वीकारी छे. जुओ—

१ वर्षाक्रतुना कालमां महीतल जीवाकूल होवा छतां कारणे भार दई दईने विहारो बताव्या छे।

२ गच्छ अने पुस्तकनी बृद्धि अर्थे खुद आचार्य अयाचित ब्रह्मने उठावी लेवुं।

३ लोढानां उपकरणो मुनिए काममां लेवां।

४ संथारो काममां लेवो।

५ विष्वावाळां जोडां करी नास्तिकना मोढा उपर मारवा।

६ तटीसादरना लुगडां पहेरी गोचरी जबुं।

७ मांदा सायु माटे पात्रा राखवां अने गोचरी बीजेथी लावी आपवी।

८ मांसाहारी अने गीधपक्षीनां पीछां राखवा।

९ सावद्यांशने बोरीने पण शासननी प्रभावना करवी।

आ रीते दिगम्बर दर्शने जनेक अपवादोने स्थान आपेल छे. प्रसंगोपात्त पटलुं तो जरूर कहीशुं के दिगम्बर आगम अर्वाचीन होवाथी उत्सर्गप-

अंक ७ ]

## सभीक्षाभ्यमाविष्टरथु

[२४६]

वादनी गुण्ठणीमां तेटलो प्रकाश नथी पाडी शकया के जेटलो प्रकाश श्वेताम्बरोना मौलिक आगमोमां छे. छतां पण एक वातमां तो तेने सहमत रहेहुं ज पडे छे के ज्यां उत्सर्ग त्यां अपवाद होवो ज जोइप. बस, अमारी प्रथम वातनुं समर्थन आवी गयुं।

बीजी बाबतमां जणावानुं जे मांस बाद्य उपयोगमां पण आवी शके छे. बाद्य उपयोगमां न ज आवी शके एवुं लेखकनुं जे जणावतुं ते तेनी अल्पदर्शिताने आभारी छे। मांसनी बाद्य उपयोगिता माटे शीलाङ्गाचार्य महाराजनां वचन—

“एवं मांसमृत्रमपि नेयम्, अस्य चोपादानं क्वचिलदृताद्युपशमार्थं सद्-वैधोपदेशतः स्वेदादिना ज्ञानाद्युपकारकत्वात् फलवद् दृष्टम् ।”

आ वचनो एम जणावे छे के लृता वगेरेना महाव्याधिमां बाद्य स्वेदन-क्रियामां मांस उपयोगमां आवे छे। कदाच एम कहेवामां आवे के आ तो तमारा श्वेताम्बर आचार्यनां वचनो अमने दिगम्बरने कई रीते गले उतरे तो जुओ जैनेतरना वैधकग्रन्थमां—

भावप्रकाश—स्वेदश्चतुर्विधः प्रोक्तः, तापोष्मस्वेदसंज्ञितः ।

उपनाहो द्रवस्नेहः, सर्वे वातातिंहारिणः ॥ १ ॥

अर्थ—बाफ या शोकथी पसीनो उत्पन्न करवानो जे विधि ते स्वेदविधि कहेवाय छे. आ स्वेद चार प्रकारे छे. तापस्वेद, उष्मस्वेद, उपनाहस्वेद अने द्रवस्नेह ।

उपनाहस्वेदमां मांसनो बाद्य उपयोग—

तथोपनाहस्वेदं च, कुर्याद्रातहरौषधैः ।

प्रदिद्य देहं वातातं, क्षीरमांसरसान्वितैः ॥

अम्लं पिण्डैः सलवणैः, सुरवोष्णैः स्नेहसंयुतैः ।

उत्ग्राम्यानुपमांसैर्जीवनीयगणेन च ॥

भावार्थ—आ श्लोको वातपीडितना शरीरे खरड ‘लेप’ करी स्वेदद्वारा व्याधि मटाडवानी प्रक्रिया जणावे छे. आ खरडमां मांसना रसो तथा गामवासी या जलाशयनिकटवर्ती अनेक जीवोना मांसो बतावे छे।

आमणना व्याधिओने अंगे मांसनो बाद्य उपयोग—

“ गुदनिःसरणे प्रोक्तं, चाङ्गेरीघृतमुत्तमम् ।

अतिप्रवृत्त्या महती, भवेद्यदि गुदव्यथा ॥ १ ॥

स्विन्नमूषकमांसेन, तदा संस्वेदयेद् ध्रुवम् ।”

अर्थ—आमण नीकली होय तो चांगेरी घीनो उपयोग करवो उत्तम छे. बहु दस्तथी गुदामां व्यथा थती होय तो बाफेला उंदरना मांसथी गुदा उपर शेक करवो ।

“ गुदञ्चेशो गुदं स्नेहैरभ्यज्यान्तः प्रवेशयेत् ।

प्रविष्टं स्वेदयेन्मन्दं, मूषकस्यामिषेण हि ॥

अर्थ—आमण उपर घी, तेल बगेरे स्निग्ध पदार्थों लगावीने हाथथी तेने अंदर पेसारी उंदरना मांसथी शोक करवो । तथा महानारायण तेल के जेमां अनर्गल जानवरोना मांस आवे छे ते पण बाह्य उपयोग माटे बतावेल छे । तथा मूषक तेल जे उंदरोथी बने छे तेनो पण बाह्य उपयोग बतावेन होय । तथा बीरबीहोटी लेप के जेमां अनल्य इन्द्रगोपजातिना जन्तुओ होय छे तेनो पण बाह्य उपयोग बतावेल छे । आम सेंकडो प्रकारे मांसना बाह्य प्रयोगो वैद्यक ग्रंथे प्रतिपादन कर्या छे, परंतु जोवुं होय तो ने ?

### मांसनी बाह्योपयोगितादर्शक प्रकारान्तर

जैनशास्त्रमां वपराता मांस शब्दने अंगे जैनशास्त्राकारोप केटला अर्थमां मांस शब्दने संकेतित करेल छे, ते जाणवानी जैनशास्त्र वांचनारने अनिवार्य आवश्यकता छे. अन्यथा ग्रंथकारना तात्पर्यनो विधात करी शास्त्रने उन्मार्गमां दोरी जाय, अत एव पूर्व महर्षिओ जणावे छे के—

“ जलथलखहयरमंसं चम्मं वस सोणियं तिहेयंपि ”

[ जलचरस्थलखेचरमांसानि चर्म वसा शोणितं त्रिधैतदपि । ]

भावार्थ—विगड़ोना भेद ग्रतिपादन करता मांस विगड़ना संबंधमां जणावे छे के मांस त्रण प्रकारनुं छे. १ जलचर जीवोनुं. २ स्थलचर जीवोनुं, ३ खेचर जीवोनुं अथवा चामडी, वसा अने लोही ए पण मांस कहेवाय छे ।

हवे प्रस्तुत कल्पसूत्रना पाठने अंगे मांसशब्दथी वसा अने लोही लेवामां आवे तो तेना बाह्य उपयोगना संबन्धमां विवाद या सूक्ष्मेक्षिकाने अवकाश पण रहेतो नथी, कारण के वसा अने रुधिरनो बाह्य उपयोग आवालगोपाल प्रसिद्ध छे ।

आ अर्थ लेवामां बीजी पण एक मजा ए रही छे के रसविगड़पणुं पण सरल रीते घटी शके छे. अर्थात्—कल्पसूत्रना प्रस्तुत पाठमां रसविगड़नी गणत्रीमां मांस लीघेल छे. हवे जो मांस शब्दथो वसा अने लोही लेवामां आवे तो रसविगड़पणुं तहन सरस रीते घटी शके छे अने मांसशब्दथी मांसनो टुकडो लेवामां आवे तो रसविगड़पणुं घटावबुं कठिनता भरेलुं थाय, कारण के रसविगड़नो अर्थ रसप्रधान विगड़ थाय छे । अथवा तो रसविगड़रूप मांस एटले मांसनो रसो, आ मांसना रसाना बाह्य प्रयोगो वैद्यक ग्रंथे मांसरस प्रकरणमां अनेक रीते प्रतिपादन कर्या छे ।

आ उपरथी स्पष्ट समजी शकाय तेम छे के टीकाकार महाराजे जे जणावेल छे ते वस्तुस्थिति बतावी छे, लेशमात्र बाह्यभ्यन्तरवृत्तिनी भिन्नता नथी. छतां पण—

“ महापापथी बचवाने माटे टीकाकारे बाह्य उपयोग बतावेल छे, आ बाह्य उपयोग पण संभवी शकतो नथी ”

आवो जे दिग्म्बर लेखके आक्षेप करेल छे तेना महापापथी बचवाने माटे तेमणे शुं सदगुरु पासे प्रायश्चित्त लेवानी जरूर नथी? अपूर्ण

# અણ્ટાંગ યોગ\*

સચોનક—શ્રીયુત શાંકરલાલ ડાહાલાઈ કાપડિયા  
( ગતાંકથી આણુ )

## નિયમ—

જનમના હેતુભૂત કામ્યધનની નિવૃત્ત થઈને મોક્ષના હેતુભૂત નિષ્ઠામ ખર્બમાં પ્રેરણા કરવાનાં તપાઈ છે તેમને નિયમ કહે છે. કેટલાક સિદ્ધાન્તો એકાન્તવાસ, નિઃસંગતા, જ્ઞાનસિન્ય, ધ્યાપ્તાત્માં સંતોષ, વિષયમાં વિરસતા, અથવા ચુર પ્રતિ દ્વદ્દ અતુરાગ દ્વારા મનેવૃત્તિને નિયમમાં લાવવી તેને નિયમ કહે છે. આ નિયમના પાંચ પ્રકાર છે:- (૧) શૈય, (૨) સંતોષ, (૩) તપ, (૪) સ્વાધ્યાય અને (૫) ધર્શન પ્રણિધાન.

## શૈય-

પવિત્રતાને શૈય કહે શે. તેના એ પ્રકાર છે. (૧) આદ્ય શૈય અને (૨) આભ્યન્તર શૈય. આદ્ય શૈય એટલે રથૂલ શરીરનું મુત્તિકા (મારી), જલ આહિથી પ્રક્ષાળન કરવું, તેમ શુદ્ધ સાત્ત્વિક પરાધનું સેવન કરવું, આથી પવિત્રતા ઉત્પન્ન થાય છે. અં આદ્ય શૈય કહેવાય છે. અર્થાતું બાદ્ય સાધનોથી જે પવિત્રતા થાય છે તે બાદ્ય શૈય કહેવાય છે. સત્ત્વ સ્વભાવ, ચિત્તના કામ, કોધ, લોભ, મોહ, મહ, માત્સર્ય આઈ મલેને, મૈની કરુણા આઈ ઉપાયોથી દુર કરવા અને ચિત્તને સેતાના વાસ્તવિક સ્વરૂપમાં લાવવું-તેને નિર્મલ કરવું તે આભ્યન્તર શૈય છે.

## સંતોષ-

જીવન-નિર્વાહને જરૂર પુરતી વરતુંનો સિવાય ડાઢ પણ વરતુ પ્રાપ્તિની ધર્છા ન કરવી તેને સંતોષ કહે છે. બીજા મતે પ્રારંધ કર્માનુસાર જે અન્ન, વર્ષાદિ શાસ્ત્રોક્ત ભોગ પ્રાપ્ત થાય કે તેમાં જે તૃપ્તિ રાખવી અથવા સ્વાસ્થ્ય-શાન્તિ ચિત્તમાં સમાધાન રાખવું, તૃપ્તિનો વિવય થઈને પૂર્ણકામ હોય તેમ નિજ કાર્યમાં ધર્શનનાં દર્શન થવાં તે સંતોષ છે.

## તપ-

દન્દોને દેખ રહીત થઈને સહન કરવાં તે તપસ કહેવાય છે શીત, ઉણ્ણ, ભૂખ, ધ્યાસ, ઉદ્વાનું આઈ દન્દ કહેવાય છે. આ દન્દોને શાસ્ત્રોક્ત પ્રતો દ્વારા પણ સહન કરવાં જોઈજો.

બીજા મતે શાંતોષણું સુઅધુભાઈ દન્દોને સહન કરી નિયમિત અને સંયમિત જીવન બ્યતીત કરવું તથા અતુર્ધાન, મન્ત્ર જન્ત, ઉપાસના દ્વારા અશુદ્ધિનો નાશ કરવો તે તપ કહેવાય છે. નેણ, શ્રેણ, પૂજય, ચુર, પ્રાજનો સત્કાર અને સેવન તથા શૈય, આર્જવ, અહિસાનું પલન કરવું તે શરીરક ( કાયિક ) તપ છે. ઉદ્ગે રહીત, સત્ય, પ્રીય, દિત ભાપણ, અને સ્વાધ્યાયનો અદ્યાત્મ, વાચિક ( વાણીના ) તપ છે અને મનની

\* હિંદી ‘ કલ્યાણ ’ માસિકના ચોગાંક ઉપરથી.

[२५२]

श्री जैन सत्य अकाश

[ वर्ष ३

प्रसन्नता, सौभग्य, भैन, तथा अत्मनियंत्र भानसिंह ( भनो ) तप छे. सर्वधर्म पालन अर्थे ने तीव कष्ट सहन करवुँ पडे तेने सहन करवुँ ते तपनो अरो अर्थे छे.

### स्वाध्याय :

भेद शास्त्रोनु अध्ययन अथवा प्रश्नवभन्न या लग्बानना नाभनो जप करवो तेने स्वाध्याय कहे छे. भीज भने पठन, पाठन, श्रवण, भनन, निहित्यासन द्वारा परमात्मानो साक्षात्कार प्राप्त करवो तेने स्वाध्याय कहे छे. वणी सर्व जड एतन पहर्थो के ने वर्णनु-कुमां ग्रथित छे तेना नियमित वर्णना उच्चारणमां विद्युत्शक्ति उत्पन्न करीने तेनु आकर्षणु करवुँ, ऐम अस्यास द्वारा परापरा विद्याओतुँ संपादन करवुँ ते स्वाध्याय छे:

### ईश्वर प्रणिधानः—

सपूर्वुँ कर्मने परम गुरु ईश्वरने अपर्णु करवां ते ईश्वर प्रणिधान छे. आ पूर्वी इत पांच नियमोनां ईश्वर प्रणिधान ते परम प्रधान नियम छे. कारणु के ते अल्पाप्सित ( ईच्छित ) भनोरथ सिद्ध करवामां अपूर्व शक्ति राखे छे, अथवा तो आपणा भागमां आवतां कर्तने छिन्नभिन्न करवामां कारणभूत छे. परम पुरुष परमात्मामां समय कर्मने अपर्णु करवावाणो, सुतां, ऐसतां, हाँडनां पणु हमेशा योगयुक्त रहे छे. आथा हिन परहिन तेनी जन्मना हेतु भूत वासना आहि नष्ट थाय जय छे अने छेवटे ते परमात्म निष्ठ मनुष्य ज्ञवनमुक्तना सूझनो अनुभव भेजवे छे. आ यम अने नियमयी साकु तथा सिद्ध थवाय छे. साधनमां कोळ पणु प्रकारनी तुरी रहेती नथी. हजरो विद्वा अने बापांमो आववा छां साप्तक, स्वीकारेला भागंथी कही पणु चलायमान थतो नथी. कारणु के तेने साधनो वडे सिद्धिओ प्राप्त थयेली होय छे. योगना आधारे अहिंसानी स्थिरता थवाथी साधकना सभीप रहेवावणा ज्ञोमां स्वालिक वैर पणु क्षाणु थाय छे.

### यमनी सिद्धिओः—

अहिंसा प्रतिष्ठित भद्रानुभावनी सभीप रहेवावणां उंदर अने भिलाडी, सर्व अने नोणोंमो आवा परस्पर विरोधी जननवरो पोनानां स्वाभाविक वैरने पणु तलु हे छे. तेनी पासे रहेवावणा दरेक ज्ञवां वैरबाव सदा नष्ट थाय छे. सखनी प्रनिष्ठ हेवाथी साधक अभेद्य वाइ ( अहुव वार्द्यातुर्यवाणो ) थाय जय छे. जे वात ते कहे छे ते लोअंडनी लड्क ( ढाल ) जेवी थाय छे. सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम् आ ज प्रभागे अरतेयनी प्रतिष्ठाथी सर्वे रतो उपरिथत थाय छे अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम् । अद्वयर्थनी प्रतिष्ठाथी वीर्य प्राप्ती थाय छे. ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः अपरियहनी प्रतिष्ठाथी भूत, भविष्य, अने वर्तमान कालनी वातोनी हस्ताक्षमवत् रूपत प्रतीति थाय छे. अपरिग्रहस्थैर्य जन्मकथान्तसम्बोधः आ यमनी सिद्धिओ अतावी, हवे नियमोनी सिद्धिओ अतावे छे.

बाबू शैयनों प्रतिष्ठाथी अंगोमां बहु पवित्रतानी विद्ध ने देखो होय छे ते हेभावा भाउ छे. ज्यारे ज्यारे साप्तक, भाटी, पाणी आहिथी शरीरनी पवित्रता करे छे, त्यारे त्यारे तेने देहनी अधिक ने अधिक अपवित्रतातुँ भान थाय छे अने तेथी ए निश्चय थाय छे के देह कही पणु पवित्र नथी. अने तेथी करी तेनाथी आसक्ति छेडे छे.

# “ભરાભર” પર્વત પરની જૈન ગુફાઓ.

લેખક:- શ્રીયુત નાથાળાલ છગનદાલ શાહ.

(ગતાંકથી ચાલુ)

## લોમશ ઋષિ ગુફા.

નાગાર્જુનની ટેકરીના નામે ઓળખાતી ગ્રેનાઇટપરની ખીણું નાણ વચુ યુદ્ધાઓ આવેલ હે. આ ગુફાઓ પર રાજ દસરથના નામથી શિલાકોપો ક્રીતરાયેલ છે. મહારાજા દ્શરથ, સમાટ અશોકને પૈત્ર અને તેની પછી ગાદીએ આવનાર મનાય છે. આ ગુફાઓ આજનિકને અર્પણ કરવામાં આવી હતી. આ ગુફાઓ માંદેની ‘ગોપિકા’ નામની યુદ્ધ સૌથી મહેરી છે. એ ગુફા એક ખડ ઇપે છે, જેની લંબાઈ ૪૬ ફૂટ ૫ મંચ અને જેના ગોળાકાર છંડાઓ ૧૫ ફૂટ ૨ મંચ પહેળા છે. તેની દક્ષિણાં ખાંનું મધ્યમાં એક બારણું હે. દીવાલેની ઉંચાઈ ૬! ફૂટ છે, અંદરનો આખો ભાગ પોલીશ કરેલો હોના છતાં તહું કાઢો છે. ધર્મશાળા તરીકે તેનો ઉપયોગ થાય તે માટે તે બનાવવામાં આવી હતી, એવું અતુભાન આપણે દરી શકુંદો.

ખીજુ એ ગુફાઓ અતુક્રમે ‘વાહિયાકા’ અને ‘વડાધીકા’ના નામથી ઓળખાય છે. તેઓ એટલી અધી નાની છે કે તેમને ભાગ્યે જ કંઈ મહત્વ આપી શકાય. એ બન્ને ગુફાઓ ટેકરીની ઉત્તર બાંનું આવેલ છે. પહેલી ગુફામાં છેઠેથી પ્રવેશ કરી શકાય છે, તેને એકજ ખડ છે. જેની લંબાઈ ૧૬ફૂટ અને પહેળાઈ ૧૧ફૂટ છે, ઉંચાઈ સાડાદશ ફૂટ જેટલી છે. તેની દીવાલે સુંદર રીતે પોલીશ કરેલી છે ‘વડાધીકા’ની ગુફામાં પણ એક છેડાથી પ્રવેશ કરાય છે. તેની લંબાઈ પહેળાઈ અને ઉંચાઈ લગભગ ‘વાહિયાકા’ ગુફા’ના જેટલી જ છે.

આ ગુફાઓ ઉપરના શિલાકોપ ઉપર વિચાર કરતો આપું એદાદામ ‘સુદામ ગુફા’ના સમયકાળ અને ‘ગોપિકા’ ગુફા’ના સમયકાળ વચ્ચે થબેલું હોવું જેઠું, એટલે કે એ ગુફાઓનો સમયકાળ ધ. સ. પ્રો' ૨૫૦ થી ૨૨૦ સંધીનો સિદ્ધ થાય છે.

લોમશ ઋષિની ગુફા ઘણું કરીને સૌથી આડુનિક સમયની છે. તે સૌથી સુંદર રીતે સુશોભિત છે એમાં શક નથી. જે વસ્તુઓની આ ગુફાઓ અનેકી છે, તે વસ્તુઓ અત્યંત

(૨૫૨ મા પાનાનું અતુસંધાન.)

આન્તરિક શૈચની પ્રતિષ્ઠા પ્રાપ્ત થતાં કામ, કોષ, લોભ, મોષ, આહિ મલ ફૂર થઈ જય છે અને સફેદ વલ્લની માફક ચિત્ત અત્યંત નિર્મળ થઈ જય છે, અને આ પ્રમાણે એકાથ થઈને દ્વિધ્યોને પોતાને વશ કરીને જ્ઞાતમાં દર્શાની યોગ્યતાને પામે છે. સંતોષની પ્રતિષ્ઠાથી અત્યંત સુખનો લાભ થાય છે. સાંસારિક અને સ્વર્ગીય બન્ને સ્વામી સતોષના સુખ આગળ કંઈ હિસાંમાં નથી. તૃષ્ણાને હોડવાવાળો યુદ્ધિભાન મતુષ્ય સદ્ગ સુખ સસુદ્રમાં નિમગ્ન થાય છે. આ પ્રમાણે સંતોષથી અત્યુત્તમ સુખનો લાભ થાય છે. તપસુની સિદ્ધ પ્રાપ્ત થતાં અશુક્તા નાણ થાય છે અને તેથી અણુમાહિ આડ કાર્ય સિદ્ધાંતો અને ધીજને સાંમળનું, દેખવું વગેરે ધંદ્રિ સિદ્ધાંતો પ્રાપ્ત થાય છે. સ્વર્ણાયની પ્રતિષ્ઠાથી ધશ્વરના દર્શન થાય છે, અને કંઈએ પ્રણિભાનના રથૈરથી સમાધિની સિદ્ધ પ્રાપ્ત થાય છે. જેથી સાધક પરોક્ષ દેશ, કાળ અને સ્થાનની સધણી વાતો યથાર્થ સ્વરૂપે જાણું લે છે. (અપૂર્વ)

સખત હોવાથી આ યુક્તાંત્રમાં બહુ જ સુંદર તૈયારીયુક્ત રચના જણ્ણાતી નથી. જે લોકોએ અધાપિ પર્યત આંધકમોમાં મુખ્યવે લાડતાનો ઉપરોગ કર્યો હતો, તેમનામાં મુષ્ટળ મહેનતનો ઉપરોગ કરવા માટે પૂરતી ધીરજ હોય એમ ભાગે જ માની શકાય. તેમણે તો અંદરનો ભાગ માત્ર કાય જેવો પોલીશ કર્યો છે. અને તેટા માત્રથી એમણે સંતોષ આન્યો છે.

આ યુક્તાની બાબતમાં કેટલીઓંક મહદ્વની બાયટો ધ્યાનમાં લેવા ચોગ્ય છે. ખારવેલ મહારાજા જે ધ. સ. પૂર્વે પહેલા અગર ભીજા સૈકામાં થઈ ગયા તેમણે આજવિદોને કાઢી મૂકી તેમનાં નામો પર્યુશિલા લેખેમાંથી કાઢી નંખાવી ‘બાંધર પર્વત’ પરની યુક્તાં કલિંગ દેશના લશ્કરને રથાન આપ્યું હતું. કે મથ્ય ઝડપિની યુક્તા જે અધૂરી હતી, તે તેમણે સુયોગ્ય બનાવી જેથી ખ્લાસ્ટરનું રાસાયણિક દાખિયે પરીક્ષાણ કર્યાથી તેનો લગભગ સમય કાળ નક્કી કરી શકાય તેમ છે. દીવાલો પોલીશ કરવા માટે મહારાજા ખારવેલ મૌર્ય યુગ પછીના કરીગરોને કામે લગાડ્યા હશે એમ જણ્ણાય છે. મહારાજા અશોક અને દશરથ રાજાંનોની મૌર્ય યુગની યુક્તાંના જેવી જ આ યુક્તા છે.

મફર જે જૈનોનું વિશિષ્ટ ચિન્હ છે તે સંબંધી મી. K. Deb Codrington તરફથી સન ૧૮૮૨૬ માં બહાર પોલે Ancient India from the Earliest Times to the Guptas with Notes on the Architecture and Sculpture of the Mediaeval Period. આ નામના પુસ્તકમાં રસદાધ પુરાનો મળો રહે છે. તેમાં જૈનોના તોરણના ધાટ જેવા દુર્ગાએ કંકાલીના તેમજ મધુરામાં મત્તસ સાથે દોરવામાં આવેલ જણ્ણાય છે. લોમથ ઝડપિની યુક્તાનો સમય કાળ ધ. સ. પૂર્વે નીજ સૈકાનો હોય એમ શિલ્પશાસ્કના દાખિયિંદ્યુથી મી. કેન્ટીંગટન જણ્ણાવે છે.

મી. જેક્સને આપેલી એ વધુ બાયનોથી એક દક્ષિણ્ય હિંદના રહેવાસી અને જૈનની હાજરીનું વધુ સૂચન મળો રહે છે. (J.B.O.R.S. Vol. 12. Part, 1 pp. 51.) આ એ વધુ બાયનોથી એક સ્વરિતકની અને પાંચમી લાઠનમાં નિશ્ચલને લગતી છે.

મી. જેક્સને આ ઘને ચિહ્નો નીચેના મત્તસ ચિહ્નને પણ ઓગાખવેલ છે. (J. B. O. R. S. op. cit. pp. 51). મહારાજાન અશોકના શિલાદેખા સંબંધી મી. હલ્ટે જે ખેટા પ્રગટ કરેલી છે, તેના પહેલા ભાગમાંની પંચાનન આકૃતિએ પૈક્ષુ ‘કરનમોપાર’ ની યુક્તાના શિલાદેખ ઉપરાંત એક જ શિલાદેખ એવો છે કે જેના પર સ્વરિતકનું ચિહ્ન જોવામાં આવે છે. આ શિલાદેખ તે “જૈગઠ” ના ખડક ઉપરના શિલાદેખ જેવો છે. જૈગઠ એ ગંગામથી વયવ્ય ખુલ્લામાં આશરે અટાર માઠલ દુર એક એડેર જેવો કિંદ્લો છે. લોમથ ઝડપિ યુક્તાંનો ઉંઘે સ્વરિતક જે મળો આવે છે તે દક્ષિણ્ય હિંદના જૈનોનું એક ધાર્મિક ચિહ્ન હતું તેમ એ ચિહ્નનો ઉપરોગ હિંદના ભીજ લાગના લોકોએ બહુ જ પુરાતન કાળથી કર્યો જણ્ણાય છે. નિશ્ચલ એ જૈનોનું પુરાતન ચિહ્ન છે. મધુરાના પુરાતન સમયના કેટલાક અવશેષો પર ચાર સીધા નિશ્ચલથી અનતા ઓરસની અંદર જિન તીર્થકરની મૂર્તિ પડ્યાસને બિરાજમાન જણ્ણાય છે. (Condrlington-Ancient India pp. 45) સ્વરિતક ચિહ્નની માઝક નિશ્ચલ ચિહ્ન પણ બ્યાપક બન્યું છે.

હવે મત્તસ ચિહ્નનો વિચાર કરીએ. એક બાળુ લોમથ ઝડપિ—“કરનમોપાર” ના ચિહ્નો એટલે કે મત્તસ, સ્વરિતક અને મફર અને ભીજ બાળુ મધુરા-કંકાલીનિવાના તોરણો

આ.ક ૭ ]

## “બરાબર” પર્વતની જૈન યુદ્ધાચ્છે

[૨૫૫]

વચ્ચે અજામ સમકાળીનપણું છે. (Condrington-Ancient India pp. 48) આ જૈન ચિનહ્નો “કરનમોપાર” ની ગુદ્ધાના શિલાદેખ ઉપર જ જોવામાં આવે છે. એ યુદ્ધામાં જૈનો વિરદ્ધના આજીવિકાનાં નામો ભૂસી નાખવાનું કામ ખાસ વિશિષ્ટ રીતે થયેલું જણાય છે.

મી. વી. એચ. જેક્સને, જનરલ ઓફ ધી બીહાર, ઓરિઝસા રિસર્વ સોસાયટીના સન ૧૯૧૫ ના ભીજા અડુંગા ‘બરાબર પર્વત’ની યુદ્ધાચ્છે સંબંધી સરીક દેખ લખ્યો છે, જેમાં તેમણે “બરાબર પર્વત” પરની યુદ્ધાચ્છે અને ગોરથગિર વચ્ચેનું સામ્ય સ્થાપિત કર્યું છે. આ ગોરથગિર એક ટેકરી છે, અને તેનું મહાભારતાના સભા પર્વતના વીસમાં પ્રકારથાં વર્ણન કરવામાં આવેલ છે. યુદ્ધાના એ શિલાદેખ પૈકી જે શિલાદેખ મ્હોટા છે, તેમાં “ગોરથગિરો” એ નામથી દર્શાવેલ કરવામાં આવેલ છે. જે ભીજુંમાં બરાબર પર્વતની ચાર યુદ્ધાચ્છે પૈકી ત્રણ યુદ્ધાચ્છે આવેલી છે, તે ભીજુના વાયન્ય ખુણુંમાં ‘ગોરથગિરો’ આવેલ છે. ભીજા શિલાદેખ ઉપર “ગોરથગિરિ” એ નામ વાંચાય છે. આ શિલાદેખની લીધી કંઈક પાછળના કાળની છે. દોભાસ ઋષિની યુદ્ધાના પ્રવેશદ્વારથી છેક સાત વાર દુર “ગોરથગિરિ” માલુમ પડે છે. ગોરથગિરિનું આ પ્રકારથું ‘બરાબર પર્વત’ સચેનું સામ્ય ડેવા રીતે છે, તે પ્રગટ થયાના એ વર્ષ પછી મી. આર. ડી. ઐનરજીએ ભુવનેશ્વર પાસેની અંડગિરિની ટેકરી ઉપરના મહાબાળ આરવેલના હથી યુદ્ધાના શિલાદેખમાં ‘ગોરથગિરિ’ શણ્ઠ શોધી કાઢ્યો હતો. આ શણ્ઠ તેમને શિલાદેખની સાતમી લાઇનના ડેવે માલુમ પડ્યો હતો. આ શિલાદેખ મી. ઐનરજી અને મી. ડે. પી. જયસવાલેં પ્રગટ કર્યો છે. પ્રગટ કરેલા શિલાદેખો પરથી એ વાત સ્પ્રષ્ટ થાય છે કે-મહારાજાની રાજ્યકાળના આડમાં વર્ષમાં (૪. સ. પૂર્વે. ૧૬૫ ના અરસામાં) તેમનું સૈન્ય ‘બરાબર પર્વત’ ઉપર હતું. અને ચાર વર્ષ પછી તેમનું સૈન્ય પારિપુત્ર (પટના) આતે હતું.

હથીયુદ્ધ તેમજ તેના પરના શિલાદેખની તારીખ એક વર્ષ પછીની છે. ધ સ. પૂરેના ભીજા સૈન્યમાં ભીહાર અને ઓરિઝસા વચ્ચેનો આ પ્રમાણે જે સંબંધ હતો તેને વિચાર કરતાં તેમજ એ શિલાદેખો પૈકી ભીજાના સામ્યનો વિચાર કરતાં અને દોભાસ ઋષિની યુદ્ધાના પ્રવેશદ્વાર પાસે યુદ્ધ આવેલી છે એ ધ્યાનમાં લેતાં મહાનો, કિલ્લાચો, વગેરેના અવરોધો મહારાજાની આરવેલના સૈંચે નિવાસ કરેલ વિભાગના અવરોધો છે એમ માની શક્ય છે. દોભાસ ઋષિની યુદ્ધાનું ખોદ્કામ પણ મહારાજાની આરવેલના ફરમાન અનુસાર શરદ થયું હતું એમ માનીએ તો ચાલે. ગોરથગિરિનું નિવાસસ્થાન એધ કારણસર તજ દેવયું તેથી આ ખોદ્કામ અધુરું રહ્યું. આ યુદ્ધ કે જે પાડંસની સુદૂર યુદ્ધને અંદરની બાળુંએ તદ્દન ભણતી આવે છે તે ‘બરાબર પર્વત’ ઉપરની કે નાગાર્જુની સાત યુદ્ધાચ્છે પૈકી માત્ર એક જ અધુરી રહેલી યુદ્ધ છે. વળી તેમાં ડાઢને અર્થાં કર્યાને લેખ નથી. દીનાદેખ પરતું તેનું પોલીશ જોઇએ તેવું નથી, પણ તેનું પોલીશ કરેલું ચૈલ્ય ધોડાના નાલવાળા ચૈલ્યો દર્શાય તેમજ પદ્રિય હિંદું સામાન્ય વસ્તુ છે. (અપૂર્વ)

૧. J. B. O. R. S. Vol. 3 Part 4. PP. 486-507.

૨. J. B. O. R. S. Vol. 3 Part 4. PP. 425-485.

## समष्टिवासग-पटिकमणु-सूत याने वंहितुसूत्र

केखड़-श्रीयुत ग्रा. हीरालाल रसिकदास कापडिया अम. अ.

**प्रस्ताव**—प्रतिकमणु सूत्रोना अभ्यासीओंने तेमज प्रतिकमणु कळनाराने वंहितु सूत्र सुपरिचित छे. अने अनेक जैनोने ए कळस्थ पथ छे, तेम छां एना कर्ता वगेरेना संबंधमा अहु योउये विचार कर्या होय अम जल्दाय छे. एथी ए संबंधमा ३१वेक बिलापोह कुरवा हु श्रेष्ठ छु.

**नाम**—जेम आपणां अनेक सूत्रोतुं नाम शब्द थता शब्दरा प्रयतित अनुयुं छे तेम आ सूत्र पथ “वंहितु” शब्दथी शब्द थतुं होताथी एने ‘वंहितुसूत्र’ ए नामथी ज्ञानभावय छे. श्री विजयसंहसूरिण्ये आना उपर ने चुप्पि (चूर्णि) रसी कं तेना शीज पदमां तेमणे आ सूत्रों ‘समष्टिवासग-पटिकमणुसूत्र’ तरीके इत्येभ र्या छे. आ सूत्र उपर श्री रत्नशेखरसूरिण्ये ने अर्थदीपिका रसी छे तेना तेमणे आ सूत्रों प्रारंभमां ‘गुहिप्रतिकमणुसूत्र’ तरीके अने अंतमां ‘प्रतिकमणुसूत्र’ अवक प्रतिकमणुसूत्र अने ‘आद्यप्रतिकमणुसूत्र’ तरीके निर्देष कर्या छे.

**लाभा**—आपणां धारांभारां सूत्रोनी पेहो आ ‘वंहितुसूत्र’नी लाभा अर्धाभारी अ.

**छन्द**—आपणी महत्वपूर्ण अनेक दृतिओं आर्या छांमां रसायेवी छे. तेम आ ‘वंहितुसूत्र’ पथ आर्या छांमां रसायेलुं छे.

**विषय**—आ ५० पदोनी दृतिमां मुम्पत्वे उरीने शावडना अतियांनो इत्येभ ए अने ए अतियारो द्वारा लागेला पापथी मुक्त थवानी भावना छे. विशेषां अनें २२मा अने २३ मा पदमां पंहर कर्माहननो निर्देश छे.

**कृत्त्व**—आ सूत्रोना कर्ता कोणु छे तेना इत्येभ ए सूत्रमां नथी एहेवे ए संबंधमां जुदा जुदा विद्वानो जुदो जुदो अभिप्राय दृश्ये छे. आ संबंधमां अर्थदीपिकामां बिलापोह कुरायेका छे. एना कर्तानुं भानवुं ए छे के आ आर्यदृति छे. आवश्यकानि अंगावाह श्रुत रसायनारा श्रुतरस्थविरोनी पेहो आना कर्ता पथु कोइ श्रुतरस्थनिर छे अने एथी आ दृति अर्वाचीन नथी. आगमेक्षारक जैनार्या श्री आनन्दसागरसूनिलु पथ आ ‘वंहितु सूत्र’ने आर्यदृति गणे छे अने आवश्यक सूत्रमां ने आवडेना वनानि लगता आवापडेना कर्ता छे तेमनी ज आ दृत होवानुं सूत्यने छे.<sup>१</sup>

**उत्पत्ति**—प. मुखलालाललुं भानवुं ए छे के आवश्यक सूत्रमां ने सूत्रो सम्बन्धत्व, वार व्रतो अने संस्कृतानाने लगतां छे तेना आधारे ‘वंहितु सूत्र’नी रसना थध छे.<sup>२</sup>

**अभिवित** पठन-प्रतोने लगता अतियारनुं संशोधन करनार पोताने लगता अतियारो पूर्तु ‘वंहितुसूत्र’ ऐलता नथी, परन्तु अभिवित ऐसे छे ते डेवी शीते सकारण छे तेना खुलासे! प. मुखलाललुओ कर्यो छे.<sup>३</sup> विशेषमां धर्मसंघठना २२३ मा पत्रमां पथु सूत्र अभिवित ऐलता विषे निर्देश छे.

१: ज्ञाया अर्थदीपिकानी संस्कृत प्रस्तावनानुं आद्य पत्र.

२: ज्ञाया ‘पचप्रक्रितिमणु’नी हिन्दी प्रस्तावना, पृ. ४३.

३: ज्ञाया ‘पचप्रतिकमणु’नी हिन्दी प्रस्तावना, पृ. २४-२५.

આંક ૭ ]

## વાંહિતુસૂત્ર

[૨૫૭]

સન્તુલન-'વાંહિતુસૂત્ર' ગત સમ્યક્તવ, બારવત અને સંદેખનાના અતિચારોને તેમજ પંદર કર્માદ્ધનને લગતા ડલ્લેખની, ઉપઃસક દર્શાંગનાં સૂત્રો, આવશ્યક સૂત્ર તેમજ તત્ત્વાર્થાવિગમ શાસ્ત્રના સાતમા અધ્યાયના ૧૮ મા તેમજ ૨૦ થી ૩૨ મા સુધીના સૂત્રો સાથે સરખામણી થઈ શકે તેમ છે. વિશેષમાં 'વાંહિતુસૂત્ર'ની ૪૪ મી અને ૪૫ મી ગાથા 'જનતિ ચેધયાએ' અને 'જવંત કે વિ સાહ' એ એ તો પૃથ્રે સૂત્ર ઇપે પણ જોવાય છે. એની છેલ્લી એ ગાથા ડિનંબરીય બૃહત્પ્રતિક્રમણુમાં પાઠકેદ પૂર્વક ઉપલબ્ધ થાય છે.

વિવરણાત્મક સાહિત્ય-'વાંહિતુસૂત્ર' ઉપર વિ. સં. ૧૧૮૩ માં શ્રીજિનસિંહસ્ક્રિંગિલુએ ચૂંણી રચી છે અને શ્રીજિનહેવસુરિણુએ એ જ વર્ષમાં એના ઉપર ભાસ (ભાષ્ય) રચ્યું છે એવો અર્થદીપિકામાં ડલ્લેખ છે. આ પૈકી ચૂંણિની એ હસ્તલિખિત પ્રતિઓ 'ભાંડારકર પ્રાચ્યવિદ્યા સંશોધન મંહિર' (પૂર્ણા) માં ભારત જોવામાં અને વાંચવામાં આવી છે. અને એની નોંધો 'જૈન હસ્તલિખિત પ્રતિઓનું' વર્ણનાત્મક સૂચીપત્ર' (પુ. ૧૭ ના વ્રીણ ભાગ) માં કુંક સમયનાં સુદ્રિત થવા સંભવ છે. ભાષ્યની કોઈ પ્રતિ હજુ સુધી ભારત જોવામાં આવી નથી. જો ઉપર્યુક્ત ચૂંણી તેમજ આ ભાષ્ય હજુ કોઈ સ્થળેથી પ્રકાશિત ન થયાં હોય તો તે તરફ હું જૈન ચયોનું પ્રકાશન કરનારા મહાતુભાવેનું અને સંસ્થાને નું સાહેર ધ્યાન એચ્યું છું.

શ્રી. વર્ધમાનસૂરિણુએ આચાર દિનકરના ૩૮ મા ડિસ્પમાં જે આવશ્યક-વિધિ આપી છે તેમાં ૩૦૫ બથી ૩૧૧ અ. પત્રમાં 'વાંહિતુસૂત્ર' વિવરણ સર્વાંત આપેલું છે. વિશેષમાં 'જવંત ચેધયાએ' અને 'જવંત કે વિ સાહ' નું વિવરણ પણ ૨૭૧ અથી ૨૭૧ અ પત્રમાં તેમજે આપ્યું છે.

શ્રી. હેવેન્ડસરિણુ કૃત 'આવકાતુધાન વિધિ' યાને 'વંદ્દાર્દ્વત્તિ'ાં<sup>૪</sup> જે અન્યાન્ય સૂત્રોની વ્યાખ્યા છે તેમાં આ 'વાંહિતુસૂત્ર' ની પણ વ્યાખ્યા છે.

'વાંહિતુસૂત્ર' ઉપર શ્રી. રત્નશેખરસરિણુ રચેલી અર્થદીપિકા શેખ દે. લા. નૈ. પુ. સંસ્થા તરફથી ૪૮માં અંધાંક તરીકે ધ. સ. ૧૭૧૮માં પ્રસિદ્ધ રચેલી છે. એના સપાહું શ્રી. અનંદસાગરસૂરિણુએ એની સંસ્કરતમાં પ્રસ્તાવના લખી છે. વળી વિષયાતુકમ, અવતરણોની અતુકમણિકા, વિશેષનામોની સૂચી અને ઉપર્યુક્ત પદ્યો અને વાક્યો તેમજ લૈક્ષિક ન્યાયનો નિર્દેષ કરી એ દૃતિને સગોપાંગ અનાવવા તેમણે ઉત્તમ પ્રયાસ સેવ્યો છે.

અર્થદીપિકાની પ્રસ્તાવનાના પ્રથમ પત્રમાં અંકડાં<sup>૫</sup> કે 'વાંહિતુસૂત્ર'ની વૃત્તિ રચ્યાનો ડલ્લેખ છે, તો આ અંકડાંનું તે કોણું અને તેમજે રચેલી વૃત્તિ ક્યાં ઉપલબ્ધ છે તે જાણ્યું આક્ષા રહે છે.

શ્રી શિવપ્રકલ્પસૂરિણુના શિષ્ય શ્રી તિલકસૂરિણુએ 'વાંહિતુસૂત્ર'નું વિવરણ રચ્યું છે.

પડ્દાવશ્યકસૂત્રની વ્યાખ્યાવાળી ટેટલીક પ્રતિઓમાં 'વાંહિતુસૂત્ર'ની ટીકા જોવાય છે.

શ્રી. ચંદ્રસરિણુએ પણ 'વાંહિતુસૂત્ર' ઉપર ગીતા રચી છે અને એના આધારે કોઇક ચુજરાતી ભાલાવાઓધ રચ્યો છે એવો ડલ્લેખ મેં ઉપર્યુક્ત સૂચીપત્રમાં કર્યાતું મને શુંરે છે.

૪ આમાં બૃહત્વર્ત્તિ અને અવચૂણિંનો ડલ્લેખ છે. એટલે એ જેમાં પણ વાંહિતુસૂત્રની વ્યાખ્યા હોલ્લી જોઈએ.

[२५८]

## શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ

[ વર્ષ ૩ ]

ઉપાધ્યાય શ્રી. માનવિજયજીએ ધર્મસંખ્યાની રવોપજાતિના ૨૨૩ થી ૨૩૪ અનુધીનાં પત્રોમાં 'વહિતુસૂત્ર' અને તેની વ્યાખ્યા આપ્યા છે.

અંતમાં યતિપ્રતિક્રમણ સૂત્ર યાને સાધુ પ્રતિક્રમણસૂત્રના અંતમાં 'વહિતુસૂત્ર'ની છેલ્દી ઐ ગાથાઓ દર્શિગોયર થાય છે એ હક્કીકતનું નિવેદન કરતો અને આ લેખમાં ડોઈ વિશિષ્ટ ઉલ્લેખ કરવો રહી જતો હોય તો તે તરફ મારું લખ્ય ઐચ્ચવા તજ્જોને સાદર વિનવતો હું વિરસું છે.



### “ નયાસ્તવ ”થી શરૂ થતું પદ્ધનું કર્તૃત્વ

લેખક:—શ્રીયુત પ્રે. હીરાલાલ રસિકદાસ કાપડિયા, એમ. એ.

ગતાંકાંઠાં ઉપર્યુક્ત શીર્ષકવાળો મારો લેખ પ્રસિદ્ધ થયો છે, એમાં ડેટલાં મુદ્રણ દેખો છે તેને બાંનું ઉપર રાખી અત્ર શુદ્ધ વૃદ્ધિશર્પે નિમન લિખિત હક્કીકત રજી કરવી ઉચિત જણાય છે:—

(૧) પૃ. ૨૨૧, પં. ૧૪ થી શ્વેતાંબરીય ઉલ્લેખો નોંધાયા છે તેમાં નીચે મુજાહના એ ઉલ્લેખોને પ્રથમ સ્થાન આપવું ધરે છે:—

(અ) શ્રી યાકુની ભહતરાના ધર્મસૂત્ર તરીકે સુપ્રસિદ્ધ શ્રી હરિબદ્રસૂરીજીએ અનુયોગદ્વારની જે વૃત્તિ રચી છે તેના ૧૧૮ અને પત્રમાં તેમણે નયાસ્તવ વાળું પદ અવતરણુંપે રજી કર્યું છે,

(આ) આચારણગસ્તુતના ટીકાકાર શ્રી. શીલાંકસૂરીજીએ એની ટીકાના ૮૫ અને પત્રમાં આ પદ અવતરણુંપે આપ્યું છે અને વિશેપમાં તારાયાદ “ઇત્યાદિ સ્વયુથૈરબ્ર બહુ વિજૃમ્ભતમિત્યલં વિસ્તરેણ” એવો ઉલ્લેખ કર્યો છે. આ ઉપરથી એમ સંભાવના થાય છે કે તેઓ નયાસ્તવ વાળા પદના કર્તાને શ્વેતાંબર માનતા હોવા જોઈએ.

(૨) પૃ. ૨૨૨, પં. ૭. પૃ. ૭૬૧ ને બદલે પૃ. ૭૫૭ એમ સુધારવું.

(૩) પૃ. ૨૨૨, પં. ૩૦. પદને બદલે ૩૦ મું પદ એમ વાંચવું.

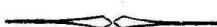
(૪) પૃ. ૨૨૩, પં. ૧૪. શ્રી હેમચંદ્રસૂરિને બદલે શ્રી હરિબદ્રસરિ એમ જોઈએ.

(૫) પૃ. ૨૨૫ ટિ. ૧૪. ચાંડિપણમાં આપેલાં એ પદો શ્રી સમાંતબદ્ધની કૃતિમાં ઉપલબ્ધ થાય છે એ પ્રશ્ન ઉમેરવો.

અંતમાં શ્રી આનંદસાગરસૂરિજી જે શ્વેતાંબરીય સમાંતબદ્ધની કૃતિ તરીકે નયાસ્તવ વાળા પદનો નિર્દેશ કરે છે તે સમાંતબદ્ધની એવી બીજી ડોઈ કૃતિ છે અને એ હોય તો તે કૃત તોનો નિર્દેશ કરવા તેમને વિનવતો હું વિરસું છું,

સંક્રિ શેરી, ગોળપુરા, સુરત.

તા. ૧૮-૧-૩૮.



## प्रवास-गीतिका-त्रयं

संशोधक-महोपाध्याय श्री यतीन्द्रविजयजी महाराज

कुकशी-ज्ञानमंदिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची तैयार करते, उसके लुटक पत्रों के बिंडल में से विक्रम संवत् १४२७ के साल का श्रीजयानन्द नामक मुनि के हाथ का लिखा हुआ एक पत्र उपलब्ध हुआ। उसमें नेमाडप्रवासगीतिका, मालवप्रवासगीतिका और बागडप्रवासगीतिका; ये तीन गीतिकाएँ लिखी हुई हैं। प्रत्येक गीतिका युगल के नीचे जूने समय की गुजराती भाषा में मतलब भी दिया हुआ है। ये गीतिकाए उस समय के जिनालयों और उनके उपासकों की संख्या जानने के लिये बड़े महत्व और जैन इतिहास के लिये अति अगत्य की वस्तु है। पाठकों के जानने के लिये यहाँ ये गीतिकाएँ ज्यों की त्याँ उद्धृत कर दी जाती हैं—

[ १ ]

### नेमाड-प्रवास-गीतिका

मांडवनगोवरि सगसया, पंच ताराउर वरा ।  
 विस-इग सिंगारि-तारण, नांदुरी द्वादस परा ॥  
 हथिनी सग लखमणीउर, इक्क-सय सुह जिणहरा ।  
 भेटिया अण्वजणवए, मुणिजयाण्द पवरा ॥१॥  
 लक्खतिय सहस-वि पणसय, पण सहस्स सगसया ।  
 सय-इगविस दुसहसि सयल, दुन्नि सहस कणयमया ॥  
 गामगामि भत्तिपरायण, धम्ममम्म-सुजाणगा ।  
 मुणिजयाण्द निरक्षिया, सबल समणोवासगा ॥२॥

—गुरु साथइं नेमाडनी यात्रा करिवा गया, मंउपाचलि ७००, तारापुराइं ५, शृंगार अनइं तारणपुराइं २१, नांदुरीइं १२, हस्तिनीपत्तनइं ७, अनइं लक्ष्मणपुराइं १०१ जिनवरना चहत्य जुहारिया, तिमिज मंडपाचलिइं त्रिण लाखि, तारापुराइं ५०००, शृंगारपुराइं ७००, नांदुरीइं २१००, हाथिनपत्तनइं २००० अनइं लक्ष्मणपुराइं २०० इम गाम-गामि ठाम-ठामइं धण कण कन-कवंता भक्तिवंता धर्ममर्मना जाण सबल श्रमणोपासिकना गृह जोहया, आत्मा घणी प्रसन्न थइ छइं, सं० १४२७ना मगसराइं यात्रा कीधइं छइं लिं जयानंदमुनिना हस्तिनीपत्तने, इति नीमाडप्रवासगीतिका.

[ २ ]

### मालव-प्रवास-गीतिका

भोजऊड-कुंदनउरि दुग, इंगलि जव जिणालया ।  
 विस अबंति पण पडासलि, कुक्कडेसरिग समया ॥

सेमलि इक्क मगसिउर दुग, इग वसइ जणमणहरा ।  
 चेह्या वारस दसउरी, पणमिया भत्तिब्भरा ॥ १ ॥  
 दुविसय इगसय पणसया, दोणिं सहस्स दुग सया ।  
 इक्कसय पणपन्नि इगसय, इग सग सय धम्मरया ॥  
 पेखिया मालवजनवण, जिणप्रया भत्तिप्परा ।  
 मुणिजयाणंद सुणंदिया, सड्गुणा पेक्ख वरा ॥ २ ॥

—गुरुदेवना संगातिइं भोजकूटि २, कुंदनपुरइं २, इगलपुरइं १, अवं-  
 तिकाइं २०, पडासलीपुरइं ५, कुर्कुटेश्वरइं १, सेमलिपुरइं १, मक्षीपुरइं २,  
 वसतिपुरइं १ अनइं दशपुरइं १२ जिनवरना उत्तुंग चौत्य बहुभक्ति भावइ  
 जुहारिया. तिमहीज भोजकूटइं २००, कुंदनपुरइ १००, इंगलपत्तनइं ५००,  
 अवंतिकाइं २०००, पडासलीपुरइं २००, कुर्कुटेश्वरपुरइं १००, सेमलपुरइं ५०,  
 मक्षीपुरइं १००, वसतिपुरइं १००, दशपुरइं ७०० इमि धर्ममा रत, भक्ति-  
 परायण, आद्वगुणवंत जिनदेवना भक्त आवकना गृह जोइ धणऊं मोद उपन्यु  
 छइं. मालवदेशना तीर्थ भेटो आत्मा पवित्र कीधइं छइं. सं० १४२७ना  
 माहमासइं यात्रा पूर्ण कीधइं. इति मालवप्रवासगीतिका लि० जयानंदमुनिना  
 सेमली नगरे.

[ ३ ]

## बागड-प्रवास-गीतिका

इग वनकोड-गिरिउरे, मेघउर पण मंदिरा ।  
 णागवई नागिंदउर इग, पाल दुग पण सब्बरा ॥  
 थानउर धुलेव इग इग, बायडे जिण चेह्या ।  
 मुणिजयाणंद सुपणिमिया, कम्मसत्त्विणासया ॥ १ ॥  
 दोणिंसय पणसय पणसया, इक्क-दुग-पण-इग सया ।  
 लक्खदले धुलेव अहिवइ, इग-पयडप्पभावया ।  
 समयसार वियक्खणा, धम्म उन्नइ कारगा ।  
 मुणिजयाणंद धणयसमा, पेक्खया सुह सावगा ॥ २ ॥

—बनकोटइं १, गिरीपुरइं ५, मेघपुरइं ५, नागेन्द्रपुरइं १, पालपुरइं  
 २, सर्वलापुरइं ५, थानापुरइं १, धुलेवपुरपुरइं १, इमि बागड-मेवाड माहीइं  
 कर्मरिपुना हणनारा श्री जिनवरना उत्तुंग चौत्य भेटिनइं आत्मा पवित्र  
 थइ छइं तिमिज वनकोटइं २००, गिरिपुरइं ९००, मेघपुरइं, ५००, नागेन्द्र-  
 पुरइं १००, पालपुरइं २००, सर्वलापुरइं ५००, थानापुरइं १०० अनइं लक्खदल  
 मांही प्रगट प्रभावना धणी अनाथोना नाथ धुलेवना पति तो एकलडाज  
 इम सिद्धान्तना विचारोमां विचक्षण धमोन्नतिना करणहार धनदसमा एवा  
 सारा आवकना धरो जोह्या धणऊं आनंद उपन्यु. इति बागड-प्रवास-गीतिका  
 लि० जयानन्दमुनिना धुलेवनगरे संवत् १४२७ चैत्रवदि ८ तिथो.

अर्क ७]

## प्रवास-गीतिका-वय

[२३२]

इन प्रवास-गीतिकाओं में कहे हुए प्राचीन गांवनामों और उनमें जिनालयों व श्रावकों के घर तथा उनके वार्तमानिक परिचय की तालिका इस प्रकार हैः—

गांवका नाम जिनालय संख्या श्रावकगृह संख्या वर्तमान रेलवे स्टेशन रियासत

प्राचीन वर्तमान प्राचीन वर्तमान प्राचीन वर्तमान

मंडपाचल	मांड	७००	१	तीन लाख	०	धार	महू
तारापुर	तारापुर	५	०	५०००	०	"	"
शृंगारपुर	सिंगाणा	२६	०	७००	२	धार, इन्दौर	"
तारणपुर	तालनपुर	२६	२		०	इन्दौर	"
नानदुरी	नानपुर	१२	१	२१००	१	आलीराजपुर	दोहद
हस्तिनो—चिक्की—	७	०		२०००	०	ग्वालीयर	"
फान	ढोला						
लक्ष्मणपुर	लखमणी	१०१	१	२००	०	आलीराजपुर	"
भोजकूट	भोपावर	२	१	२००	०	ग्वालीयर	महू
कुन्दनपुर	अमीशरा	२	१	१००	१	"	"
इंगलपुर	रींगनोद	९	२	६००	१६	देवास	जावरा
अवन्तिका	उज्जैन	२०	५	२०००	१००	ग्वालीयर	उज्जैन
पटासलीपुर	पटासली	५	१	२००	०	इन्दौर	सुवासरा
कर्कुटेश्वर	कुकडेसर	१	३	१००	४०	"	भीमच
सेमलिपुर	सेमलिया	१	१	६०	२५	नामली	नामली
मशीपुर	मगसी	२	१	१००	२५	ग्वालीयर	मकसी
वस्तपुर	बही	१	१	१००	०	"	पीपल्या
दशपुर	मन्दसौर	५	४	९००	०	"	मन्दसौर
वनकोट	बंकोडा	१	१	२००	१५	डुंगरपुर	भू. भू. भू. भू. भू.
गिरीपुर	डुंगरपुर	५	४	९००	६०	"	भू. भू. भू. भू. भू.
मेघपुर	बडोडा	५	१	५००	५०	"	भू. भू. भू. भू. भू.
नोरेन्द्रपुर	चृंडावाडा	१	०	१००	०	"	भू. भू. भू. भू. भू.
पालपुर	पाल	२	१	२००	१	"	भू. भू. भू. भू. भू.
सर्वलापुर	सावरा	५	१	५००	१५	"	भू. भू. भू. भू. भू.
थानापुर	थाना	१	०	१००	०	"	भू. भू. भू. भू. भू.
धुलेवपुर	केशरियाजी	१	१		०	उदयपुर	भू. भू. भू. भू. भू.

गीतिकाकारने अनूपदेश (नेमाड्ग्रान्त) के मांडू, तारापुर, सिंगाणा, तालनपुर, नानपुर, चिकलीढोला और लखमणी इन सात स्थानों का प्राचीन परिचय दिया है। परन्तु वर्तमान में मांडू, तालनपुर और नानपुर में एक एक जिनालय है। उनमें मांडू के सिवाय के जिनालय प्राचोन नहीं, अर्वाचीन हैं। प्राचीनता के विषय में मांडू के बाद दूसरा नम्बर खमणी का है।

इस समय यहाँ दो दो मील चोरस जमीन पर अनेक जिनालयों के खण्डहर धरोहर रूप में पढ़े दिखाई देते हैं जो इसकी पूर्वकालीन जाहोजलाली के अस्तित्व को अद्यापि पर्यन्त बतला रहे हैं। ता. २९-१०-३२ के दिन यहाँ बालुभीलाला के खेत म श्रीपद्मप्रभस्वामी आदि की चौदह जिनप्रतिमा प्रगट हुई थीं, जो बड़ी सुन्दर और सर्वाङ्गावयव परिपूर्ण हैं। इनमें श्रीमहावीर भगवान की प्रतिमा उसके चिह्नों से परमार्हत राजा सम्प्रति के समय की प्रतीत होती है। अतएव यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि श्रीलक्ष्मणपुर जैनतीर्थ दो हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है। यहाँ पर एक विशाल जिनालय का आलीराजपुर जैनसंघ के तरफ से जीणोंद्वार कराया गया है जो लम्बाई में १२० फुट, चौड़ाई में ५० फुट और ऊंचाई में ३५ फुट के अन्दाजन है। इसमें सं० १९९४ मगसरसुदि १० सोमवार के दिन सविधि प्रतिष्ठा होकर भूर्निंगत जिनप्रतिमाएँ विराजमान हो चुकी हैं—जिनमें तीर्थपति मूलनायक श्रीपद्मप्रभस्वामी की प्रतिमा विक्रमाब्द १०९३ वैशाखसुदिष्व और शेष श्रीअःदिनाथ आदि की १३७० माघसुदि ५ सोमवार की प्रतिष्ठित हैं। इन प्रतिमाओं के प्रतिष्ठाकर कौन जैनाचार्य हैं?—यह अभी खोज पर निर्भर है।

मालवदेशीय तीर्थों में मगसी पार्श्वनाथ का विशाल सौध शिखरी जिनालय मांडू के धनकुबेर संग्रामसिंह सोनी का बनवाया हुआ है। कुकडेसर का दिव्य जिनमंदिर श्रीपार्श्वनाथ की छद्मावस्था के समय का बना माना जाता है। वही पार्श्वनाथ का विक्रमीय ९वीं शताब्दी का और पडासली का १२वीं शताब्दी के आसपास का बना मालूम होता है। सेमलिया शान्तिनाथ का जिनालय एक यतिजी कहीं से उड़ा कर लाये हैं ऐसी किम्बदन्ति है। इसके सामने के चार थंभों से भाद्रवासुदि २ के दिन पहले दूधसा पानी निकलता था और अब केवल अत्यल्प जल ही निकलता है, यही इसका प्रभाव है।

बागड्ग्रान्तीय तीर्थस्थानों में वर्तमान में श्रीकेसरियाजी के अलावा बडोदा विशेष पुराना तीर्थ है। कहा जाता है कि केशरियानाथ की प्रभावशालिनी जिनप्रतिमा प्रथम यहीं प्रगट हो, बाद धूलेवगाँव में प्रगट हुई थी, उसके स्मारक रूप में यहाँ गाँव से थोड़ी दूर पीपलबृक्ष के नीचे चरण स्थापित हैं। यहाँ पर गाँव के बाजार में अति उत्तुग कुरशी और शिखरबाला जिनालय विक्रम की ९वीं शताब्दी का बना हुआ है जो

अपनी नक्की और शिल्प की सजावट में अद्वितीय है। इस प्रान्त में यह स्थान केशरियाजी के समान ही तीर्थस्वरूप माना जाता है और छंगरपुर, पुनाळी, बंकोडा, पूंजपुर, आशपुर, साबरा आदि गाँवों के भावुक इसकी यात्रा के लिये आया करते हैं। इसके आसपास के जंगली प्रदेश से कभी कभी जिनप्रतिमाएँ और जिनालयों के अवयव भी प्रगट हुआ करते हैं, जो इसकी प्राचीनता के घोतक हैं।

चूंडावाडा गाँव से दो मील दूर आमलाघाटा पहाड़ की खोह में उसकी ढालू भूमि पर नागपति धरणेन्द्र का छोटा शिखरबद्ध सुन्दर देवालय है जिसमें धरणेन्द्रजी की श्याम वर्ण सकण भव्य मूर्ति स्थापित है। उसके नागफण पर छोटी श्रीपार्श्वनाथ की मूर्ति विराजमान है। इस प्रान्त में यह स्थान नागतन, नागोतन और नागकडा नाम से प्रसिद्ध है, परन्तु इसका असली नाम ‘नागफणीतीर्थ’ है। इस प्रभावशाली तीर्थ की स्थापना विक्रमीय १४वीं शताब्दी के आरम्भ में हुई मालूम होती है। इसके चारों तरफ इतनी सघन झाड़ी है कि जिसमें हिंसक जन्तुओं का भय सदा रहता है। बिना साथ, अकेले इसकी यात्रा करना जान जोखिम का काम है। वारिश में तो इसका रास्ता भी बन्द रहता है। पहले यहाँ भारी मेला भी भराता था, परन्तु सरकारी इन्तजाम बराबर न होने से वह बन्द हो गया। देवालय की सीढ़ीयों के नाके पर मजबूत बांधे हुए ऊपर नीचे दो जलकुंड हैं। उनमें गोमुखों द्वारा देवालय के नीचे से तीन झरणों का जल एकत्रित हो कर गिरता है। उसकी जलधारा एक इंची जाड़ी बारहो मास दिनरात पड़ती रहती है, दुष्काल में भी बन्द नहीं होती। आश्र्य है कि कुंड पर खड़े रह कर यदि नागफणी-पार्श्वनाथ की जयध्वनि की जाय, तो जलधारा तीन इंची जाड़ी पड़ने लगती है और जयध्वनि बन्द करने से अपने मूल स्वरूप में कायम रहती है। हमेशां जलधारा पड़ती रहने पर भी, उसका जल कुंडसे बाहर वह कर नहीं जाता, किन्तु कुंड में ही विलय हो जाता है और कुंड सदा जलपूर्ण ही रहते हैं। यही इस तीर्थ का आश्र्यजनक प्रभाव है। दूसरा प्रभाव यह है कि इस स्थान पर कोई अवधृत योगी ठहर नहीं सकता। अगर कोई हिम्मतपूर्वक धूनी लगा कर ठहर भी जाय तो दूसरे या तीसरे दिन धरणेन्द्रजी उसको ऐसा भय-भीत कर देते हैं कि-जिन्दगी पर्यन्त वह यहाँ फिर आनेका नाम नहीं लेता, अस्तु। इसके पास ही तीन चस्मे की छोटी धर्मशाला है जो जीर्णशीर्ण हो रही है। अब इस प्रभावशाली जैनतीर्थ के जीर्णोंद्वार की आवश्यता है। अँ शान्तिः ! शान्तिः !! शातिः !!!



# ઉવસગહર સ્તોત્ર

લેખક-શ્રીયુત સારાભાઈ મહિલાદત નવાય

(ક્રમાંક ૨૬-૨૭ થી ચાલુ)

આ સ્તોત્રની મૂળે ગાથાએ પાંચ જ હતી, તે સંખ્યાના ધીન ઉલ્લેખો આપનાં  
પહેલાં, તેની ઉપલબ્ધ ટીકાએ, ટીકાકારો વગેરેનાં પ્રમાણે આપણે પ્રથમ તપાસી લખાએ.

૧ બૃહદ્વત્તિ રચનારતું નામ તથા સમય નિશ્ચિત નથી, પરંતુ ‘ઉવસગહર સ્તોત્ર’  
ની લધુ વૃત્તિના રચનાયથી ‘શ્રી. ચન્દ્રાચાર્ય’ મૃહદ્વત્તિમાંથી કેટલાક મચેનો ઉલ્લેખ કરે છે,<sup>૧</sup>  
તે ઉપરથી એમ માનવાને કારણું મલે છે કે વિકભની બારમી સદીમાં બૃહદ્વત્તિ હૃત  
હોવી જોઈએ.

૨ શ્રી. ચન્દ્રાચાર્યદ્વારા લધુવૃત્તિ.<sup>૨</sup> સમય-વિકભની બારમી સદી.

૩ શ્રી. પાર્વિદેવ ગણિદ્વારા લધુવૃત્તિ.<sup>૩</sup> સમય-વિકભની તેરમી સદી રીતનાં.

૪ શ્રી. જિનપ્રભસુરિદ્વારા વ્યાપ્યા.<sup>૪</sup> સમય-વિકભની ચડેદ્વારી સદી.

૫ શ્રી. જયસાગરદ્વારા વૃત્તિ. સમય વિકભની પદ્ધતિમાં સદી.

૬ શ્રી. હર્ષભૂતિસુરિદ્વારા વ્યાપ્યા.<sup>૫</sup> સમય-વિકભની સતતમી સદી.

૭ શ્રી. સિદ્ધિદ્યગણિદ્વારા વ્યાપ્યા.<sup>૬</sup> સમય-વિકભની અદ્યારમી સદી.

૮ જૈન અન્થાવલીમાં દર્શાવેલ લધુવૃત્તિ (શ્લોક ૮૫૦ ?)

આ પ્રમાણેના આડ ઉલ્લેખો ઐકો નં ૧ની બૃહદ્વત્તિ તો અને ઉપલબ્ધ નથી અને  
નંબર ૮ ‘જૈનઅન્થાવલીમાં’ દર્શાવેલ ૮૫૦ શ્લોક પ્રમાણની લધુવૃત્તિ ને જણાવી છે તે  
કોઈ ટીકા નથી, પરંતુ ‘ઉવસગહર સ્તોત્ર’ ના માહાત્મ્ય ઉપર રચાએલી ‘પિયંકરનુપકથા<sup>૭</sup>’  
ની જ પ્રત છે. અને તેના અંત ભાગમાં ॥ ઉપસર્ગહરસ્તોત્રલઘુવૃત્તિરિયં સમૃદ્ધા ॥  
આ પ્રમાણેનો ઉલ્લેખ હોવાથી જ જૈન અન્થાવલીમાં તે પ્રમાણે ઉલ્લેખ કરેલો છે.  
કારણું વૃત્તિના શ્લોક ૮૫૦ નથી, એટલે નંબર. ૨ થી ૭ સુધીના ટીકાગેરેનાં પ્રમાણેની  
બારીક તપાસ કરવાથી ગાથાએનું પ્રમાણ જણાઈ આવશે.

૧ “જૈનસ્તોત્ર સંહોલ ભાગ. ૧લા” ના ગ પરિશાષ્ટ, પૃષ્ઠ ૭૫-૭૬ જુઓ.

૨ “જૈનસ્તોત્ર સંહોલ ભાગ. ૧ લા” ના ગ પરિશાષ્ટ, પૃષ્ઠ ૬૭ થી ૭૬ માં પ્રકાશિત.

૩ “જૈનસ્તોત્ર સંહોલ ભાગ. ૨, મંત્રાધિરાજ ચિંતામણિ” ના પૃ ૧ થી ૧૩માં પ્રકાશિત.

૪,૫ અને ૬ “અનેકાર્થ રલ ભંનુષા” નામના અંથની પાણી જોડેલા ‘સપોરમ-  
રણનિ’ પૃષ્ઠ ૭થી ૨૪ ઉપર અપાયેની દ્વિતીય સમરણ વૃત્તિ જુઓ.

૭ “પિયંકરનુપકથા” ના શુન્નરતી ભાષાંતર માટે મારા તરફથી હવે પછી પ્રસિદ્ધ  
થનાર “મહાપ્રાભાવિક નવ સમરણ” નામનો અંથ જોડે વાયકોને મારી ભદ્રામણ છે.

૮ જુઓ. Prof. Peterson દ્વારા સંપાદિત (operations in search of  
Sanskrit MSS. in the Bombay circle. Page. 123) જૈનીય પુસ્તકાકાનિ  
વિમાગ.

આંક ૭]

## ઉવસ્તગાહર સ્તોત્ર

[૨૫૫]

૨ શ્રી ચન્દ્રાચાર્ય—“ઉવસ્તગાહર સ્તોત્ર’ની ઉપલબ્ધ ટીકાઓ પૈકીની સૌથી પ્રાચીન ટીકાના રચનાર આ આચાર્ય ક્યારે થયા, તે સંબંધિતો ઉલ્લેખ ટીકામાં ભર્તી આવનો નથી. પરંતુ તેઓએ રચેલી ટીકાનો જ આધાર લઈને ‘શ્રી પાર્શ્વદેવગણિ’એ ટીકા રચી હોય તેમ લાગ છે, કારણું બને ટીકાઓ મેળવતાં સ્પષ્ટ જણાય આવે છે કે આ બને ટીકા-ઓમાં ધાર્થી જતની સમાનતા છે. બીજું આ ટીકાકાર બીજી ગાથાની ટીકામાં જણાયે છે કે તેઓએ ચંદ્રસેષુ ક્ષમાશ્રમણુના વચ્ચાનુસાર ચિંતામણિયક કરેલું છે.”

આ ચંદ્રસેષુ ક્ષમાશ્રમણુનો ઉલ્લેખ તેરમા સૈકામાં થએલ “શ્રી વર્ધમાનવિદ્યા કદમ્બના રચયિતા શ્રી સિંહલિલકસુરિએ પણ આ પ્રમાણે કરેલો છે—“શ્રીચન્દ્રસેનપૂજ્યાચાર્ય પરંપરાગતં કલ્પં” અહીંથી પ્રશ્ન એ ઉપરિષિથ થાય છે કે ઉપર્યુક્ત ચંદ્રસેષુ ક્ષમાશ્રમણુ અને શ્રી ચંદ્રસેષુ પૂજ્યાચાર્ય એ અને એક હશે કે જુદા? મારી માન્યતા પ્રમાણે તો તે અને એક જ હોવા જોઈએ. અને તે પણ બીજા કોઈ નહિ, પરંતુ વજસેન સ્વામિના શિષ્ય અને ચંદ્રાચાર્યાના રથાપક જ હોવા જોઈએ. વળી ટીકાકાર ટીકાના પ્રાંત ભાગમાં ઉલ્લેખ કરતાં જણાવે છે કે:—

“ ઉપસર્ગહરસ્તોત્રં, વિકૃતં સંક્ષેપતો ગુરુમુખેન ।  
વિજ્ઞાય કિમપિ તત્ત્વં, વિદ્યાવાદામિધગ્રન્થાત् ॥ ”

અર્થાત—ટીકાકારે ઉપસર્ગહરસ્તોત્રં વિરાણ પોતાના યુદ્ધના મુખ્યથી સભળીને તથા વિદ્યાવાદ નામના કોઈ અન્યના તત્ત્વ પરથી કરેલું છે એમ જણાય છે. તો આ વિદ્યાવાદ નામનો અન્ય ટીકાકારના સમયમાં હોવો જોઈએ, કારણું તેઓના સમયમાં પૂર્વો તો હતાં જ નહિ કે આપણે આ સ્થળે વિદ્યાપ્રવાદ પૂર્વની કદમ્બના કરી શકીએ અને તે પ્રમાણે કદમ્બના કદમ્બી વાસ્તવિક પણ નથી, કારણું જો તેઓએ ‘પૃવર્તિ’ શખા ‘ગ્રન્થાત્’ના અદ્દે વાપર્યો હોત તો કદમ્બનાને કાંઈ પણ સ્થળ મલત. હું માતું છું કે અન્યશરે ને ‘વિદ્યાવાદ’ નામના અન્યનો ઉલ્લેખ કરેલો છે, તે કશય ‘શ્રી મૈરવપદ્માવતી કલ્પ’ના ઇર્તી શ્રી ભદ્રિષ્ણેષુરિ વિરચિત ‘વિજ્ઞાનુશાસન’ નામના અન્યનો કર્યો હશે. મારી આ કદમ્બના જો વાસ્તવિક હોય તો આ ટીકાકારને સમય શ્રી ભદ્રિષ્ણેષુરિના સમય-ચંગિયારમા સૈકાની પઢી અને ‘શ્રી પાર્શ્વદેવગણિ’ના સમય-વિ. સં. ૧૨૦૩ પહેલાનો હોવો જોઈએ. કારણું આ ટીકાકારે ‘બૃહૃદ્વર્તિ’માંના ડેલાંક મનોનો ઉલ્લેખ ટીકાન અનુભાગમાં કરેલો છે, જ્યારે ‘પાર્શ્વદેવગણિ’ નથી તો ‘બૃહૃદ્વર્તિ’નો ઉલ્લેખ કરતા કે નથી ચંદ્રસેષુ ક્ષમાશ્રમણુનો ઉલ્લેખ કરતાં, છતાં પણ આમનાંએ તો બગભગ બધાએ આ ટીકાકારને મલતાં જ આપે છે.

વળી પંડિત બહેચરદાસે “ઇત્યુપસર્ગહરસ્તોત્રલઘુવૃત્તિ: સંપૂર્ણચન્દ્રાચાર્યકૃતા સમાપ્તા” આવા કોઈ એક પ્રતિના પ્રાંત ભાગના ઉલ્લેખ ઉપરથી આ ટીકાકાર ચન્દ્રાચાર્ય ના અદ્દે સંપૂર્ણમાને સં શખા વધારનો સમજી પૂર્ણચન્દ્રાચાર્ય હોવાની એક કદમ્બના કરીને, તે ટીકાકારને વિકિમના સતરમા સૈકામાં થઈ ગયા હોવાની કદમ્બના કરી છે તે

૬ ચંદ્રણખમાસમણવયળાઓ ચક્રોત્તીર્ણ પ્રસ્તાવાત् કથિતા ॥

—જૈત સ્તોત્ર સંહેદી, ભાગ ૧ લો ૫ ૭૧

[ २५६ ]

## ઓ જેન સત્ય અકાશ

[ વર્ષ ૩

વાસ્તવિક નથી. વળી સત્તારમા સૈકામાં ‘પૂર્ણાચન્દ્ર’ નામના હોઢ પણ મુનિ થછ ગયાતું તેઓ સાભિત કરી શકતા નથી. આવી રીતે પૂરી તપાસ કર્યા વિના કલ્પના દોડાવવી વ્યાજરણી નથી.

આ ટીકાકાર ‘અન્નાચાર્ય’ ઉપસગદર સ્તોત્રની ગાથાઓ ખંચ જ આપે છે અને તેની ગાથાઓ વધારે હોવાતું લખતા નથી. તેમના સમયમાં જે ‘યૂહુદૃવતિ’ની માફક ગાથાઓ વધારે હેત તો તેઓ નેવી રીતે ‘યૂહુદૃવતિ’ના ભાગો ટાંકે છે, તેવી રીતે વધારે ગાથાઓનો ઉલ્કેખ કર્યા વિના રહેત જ નાલિ.

૩ શ્રી. પાઠ્યદેવગણિ આ પાઠ્યદેવગણિ પ્રભર મંત્રવાહી હોવા જોઈએ. પંડિત અહેયરદાસ તો આ મહાપુરુષ પણ સત્તારમા સૈકામાં થછ ગયા હોવાની કલ્પના કરે છે, જ્યારે તેઓએ ‘પદ્માવતી અષ્ટક’<sup>૧૧</sup>ના નર શ્વેકો પર પરર (પાંચસો ને બાવીશ) શ્વેકો પ્રમાણ ટીકા રચી છે. તેની પાંચ, તે ટીકાની રચનાની સાલ સ૪૪૪ જાણવી છે.

વર્ષાણા દ્વાદશભિ: શતૈર્ગતૈસ્વયુત્તરૈરિય વૃત્તિ: ।

વૈશાખે સ્રૂત્યદિને, સમર્થિતા શુક્લપञ્ચમ્યામ् ॥

અર્થાત્-સંવત ૧૨૦૩ વર્ષે વૈશાખ સુદી પચ્યમાને રવિવારના દિવસે આ વૃત્તિની રચના કરી.

આ ટીકાકાર ‘શ્રીપાઠ્યદેવગણિ’એ ‘સંગીત સમયસાર’ નામનો એક સંગીતશાસ્ત્રનો પણ ત્રયં રવ્યો છે. જે ત્રિવેન્દ્રમ સિરીજમાં છૃપૃથ ગંગેલ છે. તેઓએ રચેલા થીજા થયો ભાડે ભારા તરફથી પ્રસિદ્ધ થએલા ‘જૈન સ્તોત્ર સદોહ ભાગ ૧ તથા ૨ જા’ની પ્રસ્તાવના જોવા ભડામણું છે.

આ ટીકાકાર ‘શ્રીપાઠ્યદેવગણિ’ પોતે રચેલી ટીકાતી શરદ્યાતમાં જ આ સ્તોત્રની ગાથાઓ પાંચ જ છે, તેમ સ૪૪૪ ઉલ્કેખ કરે છે; જે આ પ્રમાણે છે:—

શ્રીપાશ્ર્વનાથસ્ય સમ્બન્ધિ મન્ત્રસ્તોત્ર ‘ઉપસર્ગહર’ નામપ્રખ્યાતં પઞ્ચગાથ-પ્રમાણમ् । તસ્ય મયા કથિતવૃજ્ઞોપદેશોન અસ્યૈવ સ્તોત્રકળ્પાનુસારેણ ચાત્મન: સ્ફુટાવબોધનિમિત્ત સંક્ષિપ્તા વૃત્તિર્વિધીયતે ।

આ ઉપરથી એમ પણ સાભિત થાય છે કે તેઓએ પોતાની ટીકા પહેલાંના પ્રાચીન કલ્પાનુસારે રચી છે; અને તેને વધારે સ્કૃટ કરી છે. તેઓના આ કથનથી એમ પણ ભાનવાને કારણું રહે છે કે તેઓએ ઉપર્યુક્ત શ્રીઅન્નાચાર્યની ટીકા જોઈ હશે, અને તેથી જ તેઓની ટીકામાં કાતન્ત્ર વ્યાકરણુંના સર્વો અને યોડા વધારના ભાગો સિવાય મેટે ભાગે કાંઠ વિરોધતા નથી. વળી તેઓ યૂહુદૃવતિનો પણ ઉલ્કેખ કરતા નથી, તેથી તેઓના જોવાં યૂહુદૃવતિ આવી નથી, તે વાત તો નિર્વિવાહ રીતે જાણું શકાય છે.

૧૦નુઝો ધ. સ. ૧૪૩૭માં ભારા તરફથી પ્રસિદ્ધ થએલ “જૈન સ્તોત્ર સદોહ ભાગ. ૧ ”ના પૃષ્ઠ ૭૬થી ૧૦૪.

૧૧નુઝો ભારા તરફથી પ્રસિદ્ધ થએલ “જૈન સ્તોત્ર સદોહ ભાગ. ૧ ”ના પૃષ્ઠ ૭૬થી ૧૦૪.

अंक ७]

## उवसंगाहर स्तोत्र

[२१७]

४ श्रीजिनप्रभसूरि-जेवा रीते, विकमनी सरपरभी सदीमां मुगल सम्राट अकबर आदशाहना दरभारभां तपागच्छाविपति जगद्युइ श्री हीरविषयसूरिए बाहशाह तरक्था सन्मान प्राप्त कर्युं हुं, तेवा ज रीते श्रीजिनप्रभसूरिए पथु विकमनी चड्डभी सदीमां तुवलक सुखतान भहुभद्याहुना दरभारभां भारे भान प्राप्त कर्युं हुं. भारतीय मुस्लिमान आदशाहेना दरभारभां, जैनधर्मतुं भहुत्व साथीत करवावाला अने तेतु जैरव वधारवाला वथुं करीने, सर्वथी प्रथम आ आचार्य थवा.

तेऽग्ने ‘उवसंगाहर स्तोत्रंनी ‘अर्थकल्पता’ नाभनी गीका संवत् १३६५ना पोष सुदी ६ ने सोभवारना रैन संपूर्णु करी हती. ते संबंधी छपाएवी गीकाना प्रांत भागभां आ प्रभाषे उल्लेख भवी आवे छे:—

“उपसर्गहरस्तोत्रे, व्याख्या किञ्चिन्मयाऽरचि ।

याऽत्र चानौचिती वाच्ये, सा शोध्या कृपया बुधैः ॥१॥

वृत्तिः सैषा विशेषोक्ति-रोचिणुः चारुचेतनः ।

‘अर्थकल्पलता’नाम, चिररात्राय वाऽर्चर्यताम् ॥२॥

५ १३ १ संवद्विकमभूपते: शारक्तदृद्धिंसृगाङ्गैमिते ।

पौषस्यासितपक्षभाजि शशिना युक्ते नवम्यां तिथौ ।

शिष्य श्री जिनसिंहस्वरिसुगुरोर्वृत्तिं व्यधात्तामिमां ।

श्री साकेतपुरे जिनप्रभ इति रूपातो मुनीनां प्रभुः ॥३॥

वणा छेल्ला ३शेषमां तेऽग्नेश्वाम्भे पोताना पुञ्य युद्देव श्री जिनसिंहसूरिना नाभनो तथा गीकाना रथना संकेतपुर नगरभां करी, तेवो उल्लेख पथु कर्यो छे.

आ आचार्यवर्यने प्रतिहिन नवुं स्तोत्र रथ्य निरवध आहार अहाणुनो अभियुक्त हो. तेऽग्नेश्वाम्भे यम्भु-शेष-चित्र-छंदो विशेषमां भिन्न भिन्न प्रकारना ७०० स्तवन१२ना रथना करी, पोते अरतरगच्छातुपायी हेवा छां पथु तपागच्छाविपति श्री सोभविक-सूरिने१३ [ शिष्य परिचाराहिना पठन पाइन भाटे ] अर्पणे कर्यां हतां. आ भहुपुरुषनी केवलीक चमत्कारिक स्तोत्र इतिए भाटे जुओ भारा तरक्थी प्रसिद्ध करवाभां आवेद्व ‘जैन स्तोत्र संदेह भाग. २’ले अने ‘श्री लैरवपद्मावती कृष्ण’ नाभनो तालेतरभां प्रसिद्ध करवाभां आवेद्व अथ.

तेऽग्नेश्वाम्भ लघुभरतर शाखा प्रवर्तीनार श्रीजिनसिंहसूरिना शिष्य हता, अने चड्डभी सहीना भहुप्राभावक आचार्य छता. तेऽग्नेश्वाम्भे स्तोत्रे सिवायना रथेली कृतिश्वामी विगत अने तेऽग्नेश्वाम्भा ल्लवन अरित्रिनी दुँक सामभी, भणी शक्ति तेष्ठली, भारा तरक्थी प्रसिद्ध थम्बेल ‘मंत्रधिराज चिंताभिषि’ नाभना अन्थनी प्रस्तावनाभां आपवाभां आवेद्व छे. वणा

१२ तेऽग्नेश्वाम्भे रथेलां उपवस्थ स्तोत्रा भाटे जुओ. जैन स्तोत्र संदेह भाग १ लानी प्रस्तावना, पृष्ठ ५५.

१३ तेऽग्नेश्वाम्भा विशेष परिचय भाटे जुओ. जै. संदेह भाग.१ लानी प्रस्तावना पृष्ठ ५१.

[२३८]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[१५३]

तेऽग्राही श्वरसे', संसृत, प्राकृत, शैरसेनी, पिशाची वर्गेरे हरेक भाषाओंना जाणुकर लता, जे तेऽग्राहीना रचेली कृतिए ज्ञेयाथी तुरत जे जणुध आवे छे.

वराहभिहिर अने आ रतोना रथना करनार श्री लद्धाहुक्त्वामी भाईओ लता, ते संबंधीने सौथी प्राचीन उल्लेख<sup>१४</sup> तेऽग्राही पोताना दीक्षानी शहदातमां जे करे छे. जेनी नेंध आ वेखनी शहदातमां जे देवामां आवी छे. परंतु आ कृति अनुदेवलीये करेकी हेवाथी तेना महिमा भाटे अशक्ता करवी नहि, १५ अतु जेतेज पोतानी दीक्षामां वर्णये छे; अटने के आ रतोना कर्ता अनुदेवली भद्रभाषु जे छे, ऐम तेऽग्राहीनु पथ भानवुँ छे.

वणी आ रनोनी पहेली गाथामां जगद्वत्त्वभक्त, सौभाग्यकर, भूतानिनियहकर, कुर्सी-पदवनाशकर वर्गेरे आड यत्रा अने पार्थ्यद, यक्षिणीना भत्रा जोपवेता छे. भाऊ गाथामा पहेलो 'विषधर स्कुलिंग' भत्र'नो 'वृहद्ब्रह्म' नाभनो सर्व संपत्तिने आपवावणो यंत्र तथा 'यिंताभिषि यक्त' नाभनो यिंतवेला कार्यनी सिद्धि करनारो न४—अग्नि—चोर—शक्तिनी वर्गेरे क्षुहेपद्धन निवरण्य करनारो यंत्र जोपवेलो छे. तीजु गाथामां वृद्धा शम्भनो नाश करवावणो, भृतवत्सा होपनो नाश करवावणो तथा काश्वर्द्धा होपनो पण नाश करवावणो, आणकोनी अहुपीडा निवारणु करवावणो, दुर्भगने सौभाग्य हेवावणो, अपरभार वर्गेरेनो नाश करवावणो ऐम अनेक यत्रा कहेलां छे. चोथी गाथामां वणी सर्व अभिष्ठेने आपवावागु हेवकुल अने 'कृत्यकुम' यंत्र कहेलो छे. तथा पांचमी गाथामां शांतिक, चौष्ठिक अने भूत—प्रैत—शक्तिनी—डाक्टीनी—जवर्दान्तो नाश करनार तथा सर्वरक्षा जोपवेली छे. आ प्रभाषेतु वर्णन दीक्षाकारे दीक्षाना छापेला पृष्ठ ८ तथा ८ उपर करेलुँ छे.

आ यत्रा वर्गेरेतु वर्णन भराफेरे श्री यन्द्राचार्यार्थनी दीक्षा के जेनो उल्लेख हु अगाड नयर ऐमां करी गयो हुँ, ते दीक्षानी अंदर अतावेला यत्राना वर्णनने भराफेर भलतुँ आवे छे, अने तेथी जे श्री जिनप्रभुसूरजे ते यत्रा वर्गेरे केवी रीते अनावां तेतु वर्णन पोतानी दीक्षामां आपतु उचित नहि धार्युँ होय.

भाऊ गाथानी दीक्षामां पृष्ठ. १६ उपर तेऽग्राही वृहद्वृत्तिनो उल्लेख करतां लप्पे छे के:

**“वृहद्वृत्तौ-शान्तिकपौष्टिकवश्याकर्षणोच्चाटनस्तम्भनविद्वेषणमारणलक्षण-कर्मनिर्माणालंकर्मणित्वमेतन्मन्त्रस्य”** (अनुसंधान २६८ आ पानामा)

१४ आ उल्लेखने अराखर भलनो जे उल्लेख 'प्रथधयिंताभिषि'ना रथनार भेडुत्तुं-स्त्रूरि पणु करे छे. अने ते अंथनी रथना वि. सं. १३६१ मां थमेली छे, परंतु आ अन्ने आचार्यी समझलीन हेवाथी जे आ उल्लेखने भे सौथी प्राचीन उल्लेख कहेलो छे. कारणुडे अनेमां तक्षवत चार जे वर्णनो छे.

१५ 'पञ्चपरमेष्ठिगमितत्वात् श्रुतकेवलिप्रणीतत्वाच्च नास्य स्तवराजस्य प्रभावमहिमा दुःश्रद्धानः। साक्षात् क्रियन्ते चास्य विवेकिभिरनेके प्रभावातिशया इति।'-सप्तस्तम्भरणानि-पृष्ठ १०.

## दिगंबर शास्त्र कैसे बने ?

लेखकः-मुनिराज श्री दर्शनविजयजी

( गतांक से क्रमशः )

प्रकरण १७—आ. सोमप्रभसूरिजी

इवेताम्बर गुर्वावली और पट्टावलीओंमें सूरिपरंपरा है कि—

भगवान् महावीरस्वामीसे यथानुक्रमसे पट्टधर ४१ अजितदेवस्थरि, ४२ विजयसिंहस्थरि, ४३ सोमप्रभस्थरि-मणिरत्नस्थरि और ४४ श्रीजगच्छद्वस्थरि हए।

४१ अजितदेवस्वरि—आपके गुरुभ्राता वादिदेवस्वरिजीने गूर्जराधीश्वर महाराजा सिद्धराज जयसिंह की पंडितपरिषद्में अणहिल्लपुर पाटणमें दिग्म्बर आचार्य कुमदचंद्र को शास्त्रार्थ करके पराजित किये थे।<sup>१</sup>

४२ विजयसिंहसूरि—आपने सं० ११४३ बै० सु० ३ गुरुवार के दिन प्रतिष्ठित जिनमर्ति नाडोल के जिनमन्दिरमें विद्यमान हैं। (ले० नं० ३७६)

**४३ सोमप्रभस्त्रि**—आपने शतार्थी श्लोक, कुमारपाल प्रतिबोध, सुमति-नाथचरित्र, सिन्दूरप्रकर (सूक्तमुक्तावली) और शृंगारवैराग्यतरंगिणी वगैरह ग्रंथ बनाये हैं। आपने सं० १२३८ माघ शुक्ल ३ शनिवारको जिन-मानृषट्टिका को प्रतिष्ठा कि है जो आज शंखेश्वरतोर्थ के जिनमंदिरमें विद्यमान है। (लेख नं० ४९८)

१ दिन आ० जयसेनने पंचास्तिकाय (रचना विं सं० १३६९) और प्रवचनसारकी टीकाएं बनाई हैं। आपने प्रवचनसारकी टीकामें इन्हीं आ० कुमुदेन्दु को नमस्कार किया है। आ० जयसेन के गुह नयकीतिका स्वर्ग-गमन शं सं० १०९९ में है। —स्वामी समन्तभद्र, पृ० १६७

( ૨૬૮ મા પાનાતું અતુસ્કધાન )

અર્થાતું-આ જ મંત્રથી શાંતિક પૌર્ણિમા-વર્ષયકર્મ-આકૃષ્ણ-રતભન-નિદ્રાપણું-મારણું  
વગેરે કર્યો થતું શકે છે.

આ ટીકાકાર ને બૃહદ્વિતિનો ઉલ્લેખ કરે છે તે “બૃહદ્વિતિ. ચન્દ્રચાર્ય જેમાંથી મન્ત્રાં ટાંકે છે તે નહિ પણ ચન્દ્રચાર્યની ટી નો જ અથવા તો ‘ચિત્તામણિ’ કર્તૃનો ઉલ્લેખ કરે છે, કાંચુ કે ટીકાકાર ભીજુ ગાથાના ટીકામાં આ બૃહદ્વિતિનો ઉલ્લેખ કરે છે અને ભીજુ ગાથામાં ‘ચિત્તામણિ’ મન્ત્ર જોપનેલો છે, જ્યારે ચિત્તામણિ મન્ત્રનું વિશ્રતુત વર્ણન ‘ચિત્તામણિ’ કર્તૃનું એમાં છે. પરંતુ તેમો બૃહદ્વિતિનો ઉલ્લેખ કરે છે, તે જોનાં તો ચન્દ્રચાર્યની ટી નો જ ઉલ્લેખ કરતા હશે, કારણું કે શરણાતમાં પણ તેમાંથી જ ઉલ્લેખ કરેલો છે, જે આંતરની નોંધ મેં આ કેખમાં જ કરેલી છે. (અપુર્ણ)

૧૬ જુઓ “આ માનતું ગસુરિ શિષ્ય શ્રી ધમેધોષસુરિ કૃત ‘યિતામણુ કલા’”.

-મંત્રાધિરાજ ચિંતામણિ પૃષ્ઠ ૩૦થી ૩૫.

**४४ श्रीजगच्छस्मरि—**आपने कई दिगम्बर आचार्योंको शास्त्रार्थमें पराजित किया है। आप बड़े त्यागी व तपस्वी थे। आपकी तपस्या के प्रभावसे आपको “महातपस्वी” की उपाधि मिली थी। अतएव आपकी शिष्यपरंपरा की “तपगच्छ” ऐसी रुद्धाति हुई है। तपगच्छ यह निर्गन्ध गच्छ का छठा नाम है।

ये सब प्राभाविक श्वेताम्बर आचार्य हैं, दिगम्बर समाज पर भी इनका प्रभाव अच्छा पड़ा है।

आ० सोमप्रभस्मरिके सिन्दूरप्रकरण याने सूक्ष्मुक्तावली ग्रंथको दिगम्बर समाजने ज्योंका त्योंही अपना लिया है। दिगम्बर विद्वानोंने सूक्ष्मुक्तावली के पादपूर्ति ग्रन्थ बनाये हैं और भाषा कवित्त बनाया है।<sup>२</sup> इसके अलावा दिगम्बर समाजमें इस ग्रन्थ की ऐसी प्रतिष्ठा है कि इसके पक्ष श्लोकके आधारपर दि० समाजके तेरापंथी और बीशपंथीके भेद कायम हुए माने जाते हैं। वह श्लोक इस प्रकार है—

भक्ति तीर्थकरे गुरो जिनमते संघे च हिंसाऽनृत—  
स्तेयाब्रह्मपरिग्रहाद्युपरमं क्रोधाद्यरीणां जयं ॥  
सौजन्यं गुणिसंगमिन्द्रियदर्मं दानं तपो भावनां ।  
वैराग्यं च कुरुत्व निवृतिपदे यद्यस्ति गंतुं मनः ॥ सि० ८ ॥

जिन पूजहिं गुरु नमहिं, जिनमतबैन वखानहि ।  
संघभक्तिआइरहिं, जीवहिंसा नहि जांनहि ॥  
ज्ञाठ अदत्त कुशील त्यागि, परिगहिपरमानहिं ।  
क्रोध मान छल लोभ जीति, सज्जनठिति ठानहि ॥  
गुणसंग करहिं इंद्रीय दमहिं । देहि दान तप भाव जुत ॥  
गहि मन विराग इंहिविधि रहहि । ते जगमें जीवनमुक्त ॥८॥ छप्य ॥

कहा जाता है कि—इन २० बातों को माननेवाले “बीशपंथी” और इनमेंसे १३ बातों को माननेवाले “तेरापंथी” हैं। इसके ११ वे श्लोकमें

**२ सिन्दूरप्रकरणकी भाषा कवित्तका मंगलाचरण इस प्रकार है—**

शोभित तपगजराज, सीस साँदूर पूर छवि ।  
बोधदिवसआरंभ, किरनकारण उद्योत रवि ॥  
मंगल तरुपलुव, कषायकंतार हुताशन ।  
बहुगुणरत्ननिधान, मुक्तिकमला कमलासन ॥  
इह विधि अनेक उपमा सहित । अरुन वरन संतापहर ॥  
जिनराय पाय नख ज्योतिभर । नमत बनारसी जोरि कर ॥१॥ छप्य ॥  
—बनारसीविलास गुटको, पृ. ११६, पु० २० न० ५७ ।  
—श्रीदिगम्बर जैनपंचायत शिखरबन्द मन्दिर, चौकडा, सरधना।

अंक ७

## दिगम्बर शास्त्र क्षेत्रे अने ?

[२७५]

पृष्ठपूजाका विधान है जो पं० बनारसीदाससे ही चले हुए “तेरापंथी” मतसे प्रतिकुल है<sup>३</sup> । अस्तु ।

इवेताम्बरीय ग्रन्थोंको अपनाना यह तो दिगम्बर समाजमें चला आता है । किन्तु पं० बनारसीदासजीने इसके हीन्दी कवित्तमें भी अपने दिगम्बरी स्वभावका परिचय कराया है और भोलीभाली जनता को धोखेमें डालनेका प्रयत्न किया है । देखिये—

१ पं० नाथुराम प्रेमी संपादित ‘बनारसी विलास’ के पृष्ठ ६६ पर सिन्धूर प्रकरण मूल के ‘भवारण्य मुक्त्वा’ पदवाले ९८ वे श्लोकका अनुवाद नहीं दिया है, किन्तु उस स्थानमें तीन और कवित्त दे दिए हैं जिनके बारेमें संपादक महाशयको लिखना पड़ा है कि—“नीचे लिखे तीन कवित्तों के मूल श्लोक नहीं मिले ।” दिगम्बर विद्वानोंने भाषा ग्रन्थोंमें किस प्रकार गडबडाध्याय चलाया है उसका यह नमुना मात्र है । तेरापंथी दिगम्बर विद्वानोंने पुराणोंकी भाषामें भी इसी नीतिसे काम लिया है ।

२ ग्रन्थप्रणेता आचार्य इवेताम्बर होनेपर भी भाषाकारने प्रशस्तिमें उनको दिगम्बर लिख दिया है । दोनोंकी अंतिम प्रशस्तिसे इसका ठीक खुलासा हो जाता है ।

**मूल—सोमप्रभाचार्यप्रभा च यन्न, पुंसां तमःपंकमपाकरोति ॥**

तदयमुग्मिन्नुपदेशलेशे, निशम्यपानेऽनिशमेति नाशम् ॥ ९९ ॥

अभजद्जितदेवाचार्यपट्टोदयाद्रि-युमणिविजयसिंहाचार्यपादारविन्दे ॥

मधुकरसमतां यस्तेन सोमप्रभेण, व्यरचि मुनिपराज्ञा सूक्ष्मुक्तावलीयम् ॥ १०० ॥

**भाषा—पर निंदा त्यागिकरु ॥९८॥ आलस त्यागि जागि नर चेतन ॥९९॥**

जैनवंशसरहंस दिगम्बर मुनिपति, अजितदेव अतिआरज ।

ताके पट वादिमतभेजन, प्रगटे विजैसेन आचारज ॥

ताके पट भये सोमप्रभ, तिन्ह यह ग्रंथ कियो हित कारज ।

ताके पढत सुनत अवधारत, होहि सुहृष्ट जे पुरिष अनारज ॥१००॥ कवित्त दोहा—कौरपाल बनारसी, मित्रजुगल एकचित्त ।

तिन ग्रंथ भाषा कियौ, बहुविध छंद कवित्त ॥१०१॥

(अनुसंधान २७२ भा पानामां )

३ जो जिनंद पूजै फुलनिसौं, सुरनैनन पूजा तसु होइ ।

वंदै भावसहित जो जिनवर, वंदनोक विभुवनमें सोइ ॥

जो जिन सुजसकरे जब ताकि, महिमा इंद्रकरहि सुरलोय ।

जो जिनध्यान करत बनारसी, ध्वावहि मुनि ताके गुण जोय ॥११॥ कवित्त ॥

जिनपूजाष्टक, बनारसीविलास पृ० ७९में भी पुष्प (पुहप) पूजा लिखी है—

पुहप चाप धरि पुहपसर, धारी मन्मथधीर ।

याते पूजा पूहपसौं, हरै मदनसर पीर ॥५॥

# नवलकथा अने धतिहास

श्री. चुनीबाल वर्धमान शाडे बपेत “राजहृत्या”मां जैन धतिहास ५५२ ने आक्षेपा करवामां आया हुता तेने अंगे समिति तरक्षी श्री. चुनीबाई साथे पत्र व्यवहार करवामां आयो हुतो। आ अष्टा पत्रन्यवहार मासिहामां प्रसिद्ध थद गयो छ. आ आभी चर्चामां अंतिहासिक नवलकथामां क१५५८नातुं शुँ स्थान ए सुन्ध तुहो हुतो।

ताजेतरमां करांचीमा भराचेल गुजराती साहित्य परिषद वभते, पूज्य सुनिराज श्री. विद्याविजयल महाराजे, उपाध्यमां तेमना दर्शन भाट गयेला केट्लाक विद्वानो समक्ष नवलकथा अने धतिहास संबंधी वातयीत करी हुती। आ वभते श्री चुनीबाई पण् त्यां हाजर हुता। अने तेमने आ वात पसंद पठी हुती। “राजहृत्या”नी चर्चा ना अंगे आ वातयीतेने कृपयोगी समझने “पारसी संसार”मांसी अहीं आभाए छाए अने इच्छाए छाए क श्री चुनीबाई झीरीने आ संबंधी विचार हो !

कँची आते दालमां भरायेल साहित्य परिषदमां भाग देवा अनेक विद्वानो आया हुता; ऐमेभाना धना भहानाज श्री विद्याविजयलुने वढनाये आया हुता।

वातयीत दरभ्यान आ वभते शुगराती साहित्य परिषद श्री. हेमचंद्राचार्यना संबंधमां पाठ्य आते सत्र (भेगो) भरवानो ने ढगव कर्यो छ, ते भाट तथा श्री मुन शीघ्रे पेताना उपसंहारमां श्री हेमचंद्राचार्यना संबंधमां ने कांध सारी लागेणी अने भक्ति वतावी, तेमनी योग्य क१८ करी ते भाटे भहाराज शीघ्र बहु घुशी जहेर करी हुती।

आ वभते भहाराज शीघ्रे नवलकथा अने धतिहास ए ऐ वस्तुओ भिन्नुल जुटी छे अने धतिहासने नवलकथामां उतारवामां केवी हानि थाय छे ते संबंधी पण् सुदर समझ आभी हुती। भहाराज शीघ्रे जण्याव्युं हुतुं के श्री हेमचंद्राचार्यना संबंधमां श्री

( २७१ भा पानातुं अनुसंधान )

सोरहसे अक्यानवै, रितु ग्रीष्म वैशाख ।

सोमवार एकादशी, करनक्षत्र सित पाष ॥ १०२ ॥

नामसुकृति मुकावली, द्वाविश्वातिअधिकार ।

सत सिलोक परवान सब, इति ग्रंथ विचार ॥ १०३ ॥

प्रशस्तिसे स्पष्ट है कि—दिं० पं० कुमारपाल और बनारसीदासलीने इवेताम्बर आचार्यको “दिगम्बर” बताकर इतिहासमें जालसाजी की है। जिस समाज के विद्वान्, पट्टावलीमें उल्लिखित इवेताम्बर आचार्योंको भी दिगम्बर लिख देते हैं वह समाज दूसरे इवेताम्बरीय आचार्य, ग्रंथ, तीर्थ व मूर्तिओंके लिये क्या न करे ? । खैर ।

पाठकों को ज्ञात हुआ होगा कि—दिगम्बर विद्वानोंने इवेताम्बरीय सूक्तमुकावलीग्रन्थको बड़ी चालाकीसे अपनाया है। कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि—दिगम्बरसमाज साहित्य के जरिये इवेताम्बर समाजका झुणी है ।

( कम्पः )

[૪૫]

## નવલક્ષ્ય અને ધર્તિહાસ

[૨૭૩]

મુનશીએ ‘પાણી પ્રભુતા’ અને “રાજધિરાજ” માં તેમની સામે કાલ્પનિક પાત્રો ઉલ્લંખિત કરીને જોઈ રીતે ચીતરવામાં આવ્યા છે. આના સંખ્યામાં એવી દ્વાલિક કરવામાં આવે છે કે કોઈ પણ માણુસને જડત્વત એળખી તેનું માહાત્મ્ય બતાવવું તેનાં કરતાં મનુષ્ય રવબાવને તેનામાં આરોપણું કરી તેમાંથી તેને બચાવી લઈ તેની ઉત્કૃષ્ટતા બતાવવી એ વધારે સારું છે.

હેમચંદ્રાચાર્ય કોઈ ક્ષેત્રે જુઓ છે અને તેમનામાં મનોવિકારથાય છે. એ મનોવિકારથી તેઓ કેવા જિતેન્દ્રિય બને છે એ બતાવવામાં હેમચંદ્રાચાર્યનું વધારે મહત્વ કરી શકાય એમ દ્વાલિક કરવામાં આવે છે.

પણ આ દ્વાલિક પાંગળી છે. સાંસારિક અવસ્થામાં રહેણાં માણુસને મનસિક પતનના સંયોગમાં સુકૂને એમાંથી તેને જિતેન્દ્રિય તરીકે ઉંચો લાવવો એ ખરેખર મહત્વ કરી શકાય. પણ જે સંયમી છે જે, જિતેન્દ્રિય છે જે એને માનસિક પતનના સંયોગમાં મૂક્ત અને પછી જિતેન્દ્રિય તરીકે ભાનવા એ તો એના વ્યક્તિત્વને ખરેખર અન્યાય આપવા નેતું ચાય છે.

થીજી વાત એ છે કે નવલક્ષ્ય એ નવલક્ષ્યા એ નવલક્ષ્યાતું નામ જ એ સૂચને છે કે તેમાં કાંઈ નવીનતા હોય. નવલક્ષ્ય એટલે કાલ્પનિક કથા. એનું વરતુ કાલ્પનિક, એનાં પાત્રો કાલ્પનિક; એમાં ધર્તિહાસપ્રસિદ્ધ સાચાં પાત્રોતું આક્રોષન ન હોઈ શકે. નવલક્ષ્યામાં સાચાં અને કાલ્પનિક પાત્રોતું અન્યાય કરવામાં આવે એટલી તેની ઊપણું છે, તેનાં એકએક પાત્ર કાલ્પનિક હોય, ભસે વરતુ સલ્ય ધટનાગળી હોય.

શ્રી. હેમચંદ્રનું પાત્ર ધર્તિહાસપ્રસિદ્ધ સત્ય પાત્ર છે; જ્યારે મંજરીતું પાત્ર કાલ્પનિક પાત્ર છે. આ દર્શિએ પણ ધીતહાસનું ખૂબ થયેલું કરી શકાય. શ્રી. હેમચંદ્રના સ્થાનમાં કોઈ કાલ્પનિક પાત્ર જોઈને તેને ગમે તેવો વિષયી આક્રોષવામાં આવ્યો હોત તો તેમાં અન્યાય ન કરી શકત.

ઉપલી બને આખતો ‘રાજહસ્ય’ના લેખક શ્રી. ચુનીકાલ વર્ધમાન શાહ, કે જેએ પણ કરાંચી ખાતે સાહિત્ય સંમેલનમાં ભાગ લેવા આવ્યા હતા, તેમને ગમી ગઈ હતી. અને આ અને યુક્તિએ ખરેખર સાચી છે એમ તેમને કણ્ણું કર્યું પડ્યું હતું. આને અર્થ એ છે કે તેમણે “રાજહસ્ય”માં પણ મી. મુનશીની માઝે નેતોને કરેલો અન્યાય રૂપી થતો હતો. આ પછી ધર્તિહાસેમાં પણ કેવા જોગળા ચાય છે તેના દ્વારા મહારાજશ્રીએ આપ્યા હતા.

(“પારસી સંસાર”માંથી)

# પરમાર્થ મહાકવિ શ્રી. ધનપાલનું આદર્શ જીવન

બેસ્ક—મુનિરાજ શ્રી સુશીલવિજયજી

( ગતાંકથી ચાલુ )

## લીક્ષામાં આવેલ પાણણુનો ટુકડો

સુતુનિ કરી રહ્યા બાદ, ગેચરીનો સમય થતાં તેઓ નગરમાં લીક્ષા લેવાને ગયા. અપોરના મધ્યાહ્ન સમયે સર્વ નેવા પ્રયંત તેજવાળા આ કુદુર્વાં ચાલી આવે છે ? -એમ સૌને થતું, લોકેનાં ટેણેઠોણાં તેમની પાછળ ચાલતાં હતાં. પધારો, પધારોના મનોહર શરીરથી સૌ તેમનું સ્વાગત કરવા તૈયાર થતું ! મુનિવર ચાલતાં ચાલતાં એક શ્રીમંતને ત્યાં જઈ પહોંચ્યા, ધર્મલાલ કહીને તેઓ શાંત ચિંતે ઉભા રહ્યા. તેમના મનોહર દેહની ચારે તરફ અપૂર્વ તજ વ્યાપી રહ્યું હતું. તેમના ડેમણ શરીર ઉપર મુનિનો વેશ શોભી રહ્યો હતાં. અષ્ટમીના ચંદ્રતુલ્ય ભર્ય લક્ષ્માટાં જાનન્યોતિ ઝગમગી રહી હતી. તેમનું લાવણ્ય અન્ય જીવોને મંત્રમુખ બનાવી દેતું હતું. અને તેમની નિસ્પૃહતા તો અપાર હતી. શ્રીમન્તે હર્ષેણું હથ્યે, અનેકશઃ વનન કરતાં, બહુમાન પ્રવર્ક મુનિવરને લીક્ષા વહેરાવવાની તૈયારી કરી. મુનિવરે જોલીમાંથી પાત્ર બહાર કાઢી ભીક્ષા અહંકૃત કરીને પાત્ર પાછું તે લીખાં સ્થાપન કરી દીધું. આશ્રમપૂર્વક મારે લખ્યું પડે છે કે એ સમયે એ ગીતાર્થ મુનિવરનું મન જિનેશ્વર પ્રલુની સંસ્કૃત શ્લોકાભય સુતુનિ રચવામાં તલ્લીન થઈ ગયેનું હોવાથી ત્યાં રહેલ પાણણુનો ટુકડો પણ લીક્ષાની ઓલીમાં આવી ગયો. મુનિવર લીક્ષા અહંકૃત કરી પાછા ઉપાશ્રમાં પથર્યાં

## વાચનાચાર્ય પદવીથી અલેહકૃત

ઉપાશ્રમે આવી જોળીમાંથી પાત્ર બહાર કાઢતાં, પાત્રમાં રહેલ પાણણુનો ટુકડો પણ નીકળ્યો. આ લેધ અન્ય મુનિઓ અશ્રમયાક્ષીન અની રિમત વદને શોભન મુનિવરની સામે લેધ રહ્યા. આ વખતે આચાર્ય મહારાજે પૂછ્યું કે- હે મુનિ, આ શું વહોરી લાગ્યા ? આવું સરીશ્વરનું વચ્ચે સાંભળતાં જ શોભન મુનિવર કહેગ લાગ્યા કે હે સ્વરીન ! જિનેશ્વર પ્રલુની સુતુનિ રચવામાં ભાડાં મન અલન્ત તલ્લીન થયી ગયેનું હોવાથી, ભારું ધ્યાન ન રહ્યું. આ શાંખ સાંભળ્યો સરીશ્વર આશ્રમાં ગરકાવ બની ગયા. અને શોભનને કહેવા લાગ્યા કે- હે શોભન ! “તે સુતુનિઓ કેવા પ્રકારની બનાવી છે ?” શોભન મુનિએ- “ભડ્યામ્ભોજવિબોધનૈકતરણે”, ધર્ત્યાદિ જોવાશે ભગવન્તની યમકાંધ રચેવી નવી સુતુનિઓ<sup>૧</sup> શુરુમહારાજને કહી સંબળાવી. તે સંબળી આચાર્ય મહારાજ ધણા જ

૧—શોભન મુનિવરે યમકાંધકૃત ૨૪ તીર્ણકરોની જે સુતુનિઓ સંસ્કૃતમાં બનાવી છે, તે હાલ શોભન સુતુનિ તરીકે પ્રસિદ્ધ છે તે સુતુનિ પર ધનપાત્રે સંસ્કૃત દીજા રચી. તેના અતે એમ લખ્યું છે કે “તસ્વૈવ જ્યેષ્ઠબ્રાતુઃ પણિદત્તધનપાત્રસ્ય” બી. ( રચિતં )

આ ટીકા, મૂલ અને તેના યુજરાતી અનુવાદ તેમજ બીજ સંસ્કૃત અવચ્ચરી સહિત આગમોદમ સમિતિના નં ૪૭માં મુદ્રિત થયી છે.

—નૈન સાહિયનો ધર્તિહાસ. ( વિ. ૩. પ્ર.૧ ) દીપણણમાં પૃ. ૨૦૫ ૨૦૬.

अंक ७]

## महाराजि श्री. धनपाल

[२७५]

प्रसन्न थया अतुल्य नहीं पथ तेमनी आ अद्भुत कणा नेह असंतर प्रशंसा उरवा लाग्या, प्रांते शुद्धभद्रागने तेमने विद्वान थेला जाण्यी वाचनार्थ पद्धती अलड़कृत कर्या.

पोताना भाईना विचेगने लक्ष्मि दिनप्रतिनिधि धनपालनु हृष्य अत्यन्त हुःभी रहेतु हृष्टु, तेनु काँटिमान वल्ल शोक्ती करभाइ गयुं हृष्टु, अने तेना आत्मा अत्यन्त दृष्ट रहेतो होतो, जैनार्थ महेन्द्रसिंह शोभने दीक्षा आपी छे, ए वात सांभज्यामां आवतां ज तेनी आंभमाथा अङ्गारा वरभवा लाग्या, हृष्य काँटी जवा लाग्यु, शरीर धूमज्वा लाग्युं अत्यन्त केधावेशमां आवीने ते राज लोगने कहेवा लाग्यो के- हे राजेश्वर, ते साधुओ दीक्षाभारी शूहो छे, तेमनुं मुख पथ नेवा लायक नथी, श्यांयथी

आ श्रीजना अंगलायन्त्रुमां पहेला ऐ श्वेष गोनाना पिनामह ने पिता संभंधमां निकम्भंजरीमां आप्या प्रभाषे अभ्या छे. —(जुओ, कुट्टोए नं. २११)

लारपठीना श्वेषो नाचे प्र-भ्ये छे:—

अज्ञायतास्यः समजायतास्य, शास्यस्तनूजो गुणलब्धपूजः ।

यः शोभनत्वं शुभवर्णभाजा, न नाम नाम्ना वपुषाऽप्यधत् ॥ ३ ॥

कातन्त्रचन्द्रोदिततन्त्रवेदी, यो बुद्धबौद्धार्हततत्त्वतत्त्वः ।

साहित्यविद्यार्थवपारदर्शी, निर्दर्शनं काव्यकृतां बभूव ॥ ४ ॥

कौमार एव क्षतमारवीर्यश्वेषां चिकीर्षित्रिवरिष्टेमः ।

यः सर्वसावधनिवृत्तिगुर्वीं, सत्यप्रतिज्ञो विदधे प्रतिज्ञाम् ॥ ५ ॥

अभ्यस्यता धर्ममकारि येन, जीवाभिघातः कल्याऽपि नैव ।

चित्रं चतुःसागरचक्रकांचिस्तथापि भूव्यापिगुणस्वनेन ॥ ६ ॥

एतां यथामति विमृश्य निजानुजस्य, तस्योज्जवलं कृतिमलंकृतवान् स्ववृत्त्या ।

अभ्यथितो विदधतो त्रिदिवप्रयाणं, तेनैव साम्प्रतकविर्धनपालनामा ॥ ७ ॥

अर्थः—श्रीजनी अंदर धनपाल जाण्याने छे के “पोताना पिता सर्वदेवने नाम भान्ती शोभन नहीं, परंतु शुभ वर्णथी युक्त शरीरथी पथ शोभन एवो कुण नेवी लांभी आप्या वाणो, गुणुथी पूजा नेहे भेषणी छे एवो शोभन नामनो” श्लाध्य पुत्र थयो, ते कातंत्र, यंद्र(व्यापारस्थु)थी उद्य भावेल तंत्रने जाणनारो, औइ अने आर्हत दृश्येनां तत्वेनो जेनार, साहित्यविद्यार्थी समुद्रो पारदर्शी अने कविओभां आदर्शरूप थयो, द्वैभारावस्थामां अरिष्ठेनेभिनी (नेभनाथनी) चेष्टा करवानी छत्रावाणो हेय तेम नेहे भार-महनी शक्ति क्षत करी हती तेवा तेष्टे सर्वसावधनी निवृत्तिथी (जैनदीक्षाथी) जैववशाली एवी प्रतिज्ञा सत्यप्रतिज्ञा थध पाणी, धर्मना अव्यास उरता नेहे हिंसा, डक्की वडे पथु किंचित् पथु करी ज नहीं तथापी जेना गुणु (गुणु भेषवाना द्वारा)ना स्वरथी चारे सागरनुं येक जेनी भेषवार्थप छे, एवी पृथ्वी व्यापत थयो ए विचित्र छे । ते निज अतुल्य-नाना भाईना आ उज्जवल इतिने तेष्टे ज स्वर्गमां प्रथाणु करती वर्खते, अभ्यर्थना उरथेला एवा सांप्रत कवि नामे धनपादे यथामति विचारीने पोतानी वृत्तिथी सारी रीते अवदृत करी.” जेन साहित्यमो धतिहास [पि. ३, प्र. १] पृ. २०४ २०५

२ इतः शोभनदेवश्वाध्यापितः स्त्रिभिस्तदा ।

विदधे “वाच्चनाचार्यः” शक्रेणापि द्वतुतो गुणैः ॥ उद्द्या. ग्र० म० प्र०

[ २७५ ]

## શ્રી જૈન સત્ય ગ્રહણ

[ ૪૮૪૫ ]

આવી ચેતેદા એ શમના મિષથી ઋબાળકોને છેતરે છે. આટે હે રાજન! એવાઓને આપણૂં દેશમાંથી ફૂર કરવા જોઈએ. આ પ્રમાણે રાજ બોજને સમજાતી, રાજની આજાથી માલવદેશમાં શ્વેતાંધર સાધુઓને નહીં આગવા દેવાનો ફેરો પીટાયો. આથી બાર વર્ષ સૂધી શ્વેતાંધર સાધુઓ માલવદેશમાં વિચરી શક્યા નહીં.

આ પ્રમાણે માલવ દેશમાં જૈન મુનિઓને વિહાર બંધ થયેલો હોવાથી, ધારણગરીમાં હાડાકાર મચી ગયો. આવક આવિકા વર્ગ અત્યન્ત ઉદાસીન થઈ ગયો હતો. સંતસસુધુઓનું આગમન બંધ થઈ ગયું હનુ. સમરત ધારણગરી સાધુવરોથી શૂન્ય અની ગાઈ હતી. નગરીમાં ઉપદેશકોની ખામી ભાસતી હતી. બારાર વર્ષથી સાધુપુરુષોના હુકળો પદી ગમ્યા હતા. સકળ સંધ્ય ચિંતાથી ધેરાઈ ગયો હોય તેમ લાસનો હતો. આથી છેવટે લાંના સંધ્ય ગુજરાતમાં વિચરતા મહેન્દ્રસુદ્ધિને પત્ર પાછવી જણાયું કે- હે સ્વામીન, આપના જેવા સંધ્ય સાધુઓના આગમન નિવાય સમરત ધારણગરી અધ્યપતનના ડોડા ખાગણા ખુંચી ગાઈ છે. એ પે શેખાન-મુનિવરને પ્રવન્યા આપેલી હોવાથી તેમના જેણ ભાગના ધન-પાલ પુરોહિત, જૈન ર્થનનો કટોશાં. સાધુ સંતનો અસંન દેખી, મહામિશ્રાતી, રાજલોજનો મહાન કવિ, આર્હત ધર્મની ધર્મણી જ હીદણું કરે છે. હવે તેનો કંઈ પણ જ્યાય કરો તેણીક, નહીં તો અને નિધ્યાતીઓનું જેર વખતું જશે. દોડા ધર્મવિમુખ અની જશે. આટે આ પત્રને તરત જ અમલમાં મુક્ષણો, કે જેથી જૈનશાસનની મહાનૂ ઉલલિ થાય ડામણામ જૈનધર્મની વિજય પતકાયો ફરકે. વગેરે.

ધારણગરીના સંધનો પત્ર વાંચી સુરીશરે ગીતાર્થ મુનિવર્ય શેખનને કહ્યું- “હે શેખન અસારે ધરતનગરીમાં તમારો જેણ બન્ધુ ધનપાલ આર્હતધર્મની અત્યન્ત હીદણું કરી રહ્યો છે. દિવસે દિવસે ભિથ્યાતીઓનું જેર વખતું જાય છે. સાધુઓના આગમન સિવાય ધર્મવર્ગ ધર્મથી વિમુખ થતો જાય છે. અને ધર્મદ્રોષીઓ થનથન કરી રહ્યા છે. આટે હે શેખન, શિધ જાઈને જેણ ભાતૂને આર્હતધર્મની અન્દર લીન કરી જૈનધર્મનો ડંકો વગડાવો ત્યાં જવામાં તમારે અસંન દુઃખો સંદર્ભાં પડરો. સંધના ઉદ્દર્ની આતર હુરવર્યનો આવો સંદેશ સાંમજણાં જ, જેમનું અતુલ અનોયળ ભમસન સુધિને સાનંદાશ્ર્ય બનાવે છે, જેમનું સર્વોત્તમ ચારિત્ર સર્વ અતુલ્યોને અનુકરણીય છે, જેમની કવિત શક્તિ અદ્ભુત છે, એવા શેખન મુનિઓ ગુરુઆતનો સ્વીકાર કર્યો. અને કહ્યું કે હે પ્રભે, હું માર બન્ધુને પ્રતિષેષધ કરવા સત્તર જાઈશ, કારણ કે આર નિભિતે આ વિષ રેડાયું છે. તેનો પ્રનિકાર મારે જ કરવો જોઈએ. અસંન દુઃખો સહન કરવાં પડે તો પણ શું? આપણા અસન્ન ઉપકારી ચરમ તીર્થ કર શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરે જૈનશાસનની ઉન્નતિ આતર, કેદ, માન, ભાયા, અને કોભાડ્ય ચંડાલ ચોકીનો સંહાર કરવા આતર, આત્મામાં જીન પ્રગટાવવા આતર, મુદ્રિતર્ભી ઝીને વરના આતર ભરણુંત કહ્યો. સલાં હતા. તેથી હું સત્તર જાઈને માર જેણ બન્ધુને પ્રતિષેષધ કરીશ.

અને ગીતાર્થ મુનિવરોની સાથે વિહાર કરીને શેખનમુનિ દુંકવખતમાં ધારણગરીના ઉદ્ઘાનમાં આવી પહોંચ્યા.

( અપ્રૂણુ )

૧ સ્થિતાનાં ગુર્જરેદેશો, ધારાસંધો વ્યજિજ્ઞપત્ર ।

શ્રીમન્મહેવ્રસ્તરીણાં, યથાવૃત્ત યથાતથમ् ॥ ૭૪ ॥ ગ્રો મ્રો ગ્રો

## समाचार

**दीक्षा—**(१) संभवपुरमां पेप सुही चायना हिवसे पू. मु. संतोषविजयल्लाले खेलावना रत्नीश मास्तर क्यराभाइ बमुद्दासने दीक्षा आधी. दीक्षितनुं नाम कुमुदविजयल राखवामां आयुं अने तेमने मु. संतोषविजयलना शिष्य बनाववामां आया. (२) आदरियाणुमां पेप सुही चौदशना हिवसे पू. आ. विजयबहुकितसूरिलाले श्री. महेतलाल हुरभच्छ्वे नामना गुहस्थने दीक्षा आधी. दीक्षितनुं नाम माहेविजयल राखीने तेमने पू. सुमतिविजयलना शिष्य बनाववामां आया. नाममां सुधारो—गया अंकमां पू. हेमसागरलना शिष्यनुं नाम भनेविजयल छपायुं छ तेना बहाले भनेविजयल समन्वय.

**पदवी—**पू. आ. विजयवह्नभसूरिलना शिष्य श्री. भुवनविजयलने पेप सुही पुनमना हिवसे अंकात मुकामे गणी पह अर्पण करवामां आयुं.

**ज्ञानमहिर—**पू. आ. विजयवह्नभसूरिलना उपहेशथी शेठ हुमच्छ भेडनवाल त्रिवेरी ए पाठ्यमां ज्ञानमहिर बांधवा माटे अकावन हउर इपियातुं हान क्युं छ. आ. रकममां बाल संधनी रकम उमेरी एक लाल लेटदी रकमनो अर्च करी एक मकान बांधववामां आवरो अने तेमां पाठ्यना बांडारोना हुतलिभित ग्रंथो भूक्तवामां आवरो.

**संघ—**(१) हस्तुरच्छ वसंतराम नामना एक भेडनक गुहस्थ माहवडी तेरो पाठ्यथी तारंगाने रेक्षे भार्गनो संघ काढो. (२) हराड (महाराष्ट्र)थी महासुही चौदशना हिवसे कुलेज तीर्थनो छरिपाफतो संघ नीक्करो. आ संघमां पू. आ. विजयरामचंद्रसूरिल आन्य पदारदो.

**जैन उद्योग भंदिर—**डोन्डरन्स केलवणी प्रवार केन्द्रस्थ समिति तरक्की वार्षिक छसे इपियानी महद भगवाथी अने आममांथी तेल्ही रकमनी व्यवस्था थवाथी बारसीमां श्री. महावीर जन उद्योग भंहिरनी स्थापना करवामां आवी छ.

**भूर्ति नीकणी—**सेहागपुरमां त्याना वडिल प्रेमशंकर तिवारीना भगीचामांथी एक बांसानी भूर्ति भणी आवी छ. भूर्ति ७०० वर्षनी जुनी भनाय छ.

**७४०. होमीया ऐथिक ईन्स्टीट्युट—**पू. विद्यविजयलभ. ना उपहेशथी अने आर्की-काना सदृश्यस्थानी आर्थिक सहायथी करांचीमां ज्धन होमीया ऐथिक ईन्स्टीट्युटनी स्थापना करवामां आवरो.

**पुनर्जन्मतुं प्रभाषण—**तांसी ल्हाना मैरानापुर कर्माना एक गाममां राधाचरण नामनो अही वर्षनो अंध बाणक रामायण वर्गेरेना श्वेतो शुक्र रीते भाले छ अने भीजनी ल्हो सुधारे छ.

**मेलो—**आसियामां ता. ५-३-३८ना हिवसे महावीर पटोत्सव उज्जवारो.

**जमनगरनो संघ—**जमनगरथी नीकणेलो शेठ प्रेपरलाल धारशी अने शेठ चुनीलाल लक्ष्मीचंदनो छरी पाणतो संघ माह वही एकमे पालीताणु पहांचयो. छठना हिवसे माणानु मुहूर्त छ.

## स्वीकार

**वीर प्रवचन—**लेखक-श्रीयुत भेडनवाल दीपचंद चौकसी. प्रकाशक-श्रीक स्तुरचंद हीपचंद शासीनी भिलकतना वहीवटहारो. मुख्य आठ आना.

gd. No. B. 3801

तैयार छे !

आजे ज मंगावो !

# श्री जैन सत्य प्रकाश

नी

भीज वर्षनी पूरी इर्दल

जेमां

परमात्मा महावीर हेवना ज्ञानने लगता

अनेक विद्वताभर्या लेखाथी समृद्ध

# श्री महावीर निर्वाणु विशेषांक

नामना

२२८ पानाना हण्डार अंको समावेश थाय छे.

टपाल खर्च साथे किंभतः-

बाँध्या वगरना बधा अंडोना ये इभिया

बधा अंडो साथे बांधेलाना अही इभिया.

# श्री महावीर निर्वाणु विशेषांकनुं

छुटक मूल्यः-

टपाल खर्च साथे भान तेर आना.

लघ्याः-

श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक समिति

जेशंगलालाधनो वाडी, घीकुंडा,

अमहावाह. (ગुજરात)